# सुमन हूँ मैं आपके लिए....

श्रीराम कुमार तिवारी ' सुमन '

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**
India | U.K.

Copyright © Shriram Kumar Tiwari Suman2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-574-1

Cover Design: Aman Sharma
Typesetting: Pooja Sharma

First Edition: September 2025

सत्यम्                    शिवम                    सुंदरम्

# आभार और धन्यवाद

मैं हृदय के अंतः स्तल से दो साल की नातिन अवनि (निवि) का आभारी हूँ जो मेरी कविताओं की पांडुलिपि से खेलती रहती थी और अपने बालसुलभ भावों से उन्हें प्रकाशित करवाने के लिए मुझे प्रोत्साहित करती थी। अवनि मेरी सुपुत्री निधि तिवारी और दामाद जी श्री वेणुगोपाल शर्मा की दो साल की अत्यंत सुंदर, बुद्धि और गुण की खजाना सुपुत्री है। आभारी हूँ निवि, धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद ।

आभारी हूँ 'छत्तीसगढ़ जनादेश' के प्रधान संपादक श्री के.पी. साहू जी का, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर संग्रह के प्रकाशन में सहयोग किया। धन्यवाद। विशेष आभारी हूँ कम्प्यूटर आपरेटर और पांडुलिपि को प्रकाशन योग्य बनाने वाले श्री नारायण सोनी जी महासमुंद का जिन्होंने अपनी पूरी दक्षता का प्रदर्शन कर टंकण का काम निष्ठापूर्वक किया है। धन्यवाद।

आपका अपना ही

पंडित श्रीरामकुमार तिवारी 'सुमन'

(राज्य स्तरीय दीर्घकालिक वरिष्ठ पत्रकार)

सौभाग्य भवन, दुर्गा चौक, गुड़रूपारा वार्ड नं. 27, महासमुंद

493445 छत्तीसगढ़ जिला- महासमुंद, छत्तीसगढ़ (भारत)

मो. 08770970324

***

# समर्पण

---

"सुमन हूँ मैं" आपके लिए मेरी कविताओं का यह संकलन सुरासित सुमनों के रूप में परमपूज्यनीया माँ स्वर्गीया श्रीमती उर्मिला देवी तिवारी, परमपूजनीय पिता जी स्वर्गीय श्री कामता प्रसाद तिवारी एवं प्रथम पूज्य सद्गुरूदेव श्री श्री 108 श्री स्वामी गुलाबदास जी निर्मोही नागा जी (डोंगर बाबा) के चरण कमलों में सादर समर्पित है।

पंडित श्रीरामकुमार तिवारी 'सुमन'

(राज्य स्तरीय दीर्घकालिक वरिष्ठ पत्रकार)

सौभाग्य भवन, दुर्गा चौक, गुड़रूपारा वार्ड नंबर 27,

महासमुंद, 493445 छत्तीसगढ़ जिला - महासमुंद, छत्तीसगढ़ (भारत)

***

# मर्मज्ञ रसिक पाठकों से...

"सुमन हूँ मैं" आपके लिए! यह मात्र मेरे काव्य संग्रह का शीर्षक ही नहीं अपितु मेरे जीवन दर्शन, भाव जगत एवं रचनात्मक चेतना की कोमल अभिव्यक्ति है। यह शीर्षक मेरे व्यक्तित्व की उस संवेदनशील सतह और तल को दर्शाता है जो मेरे भीतर सहज भाव से व्याप्त है, निर्मल है और हृदय की पुकार को शब्दों में ढालने की कला से ओतप्रोत है।

यह संग्रह मैंने स्वांतः सुखाय-अपनी आत्मिक शांति, निजी संतोष और अपनी अंतरतम अनुभूतियों को मुक्त रूप से अभिव्यंजित करने की अभिव्यंजना ही है, इसे इसी के उद्देश्य से ही रचा है। चूँकि, मेरे भाव सच्चे हैं और सच्चे भावों की प्रकृति एवं प्रवृत्ति ही ऐसी होती है कि वे सीमाओं में नहीं बंधते वे सीधे पाठकों के हृदय तक - पहुँचते हैं और कहीं न कहीं उनकी अपनी अनुभूतियों से भी तादात्म्य स्थापित करते हैं।

इस संकलन में जीवन के विविध रंग, भावनाओं की अतल गहराई, रिश्तों की मिठास, आत्मचिंतन की अनुगूंज, प्रकृति का अनदेखा सौंदर्य और समाज में हमारे आसपास हो रहे हलचलों की जीवंत झलक मिलेगी। हर कविता किसी एक खास क्षण की पकड़ है-कभी वह क्षण ईश आराधना का रहा, कभी आत्ममंथन का, कभी सौंदर्य दर्शन का, तो कभी सामाजिक यथार्थ का।

मेरे लिए लेखन एक साधना है जिसकी परिणिति सिर्फ सिद्धि ही नहीं परम सत्ता के साक्षात्कार के रूप में भी हो सकती है। यह आत्मा की वह भाषा है, जो मौन में भी मुखरित होकर गूंजती है। मेरी कविताएं कभी भोर के निस्तब्ध क्षणों में जन्मीं, कभी जीवन की उलझनों से उपजे चिंतन से सुलझन बनकर उपजी हैं, तो कभी किसी स्मृति की छाया में ही उग आई हैं। मैंने शब्दों के माध्यम से बस उन भावों को बांधने का प्रयास किया है जो मौन होकर भी सब कुछ सहजता सरलता से कह जाते हैं।

"सुमन हूँ मैं" आपके लिए- मेरा एक विनम्र प्रयास है- कुछ विचार सुमनों को इस जीवन पथ पर बिखेरने का, ताकि वे अनगिनत पाठकों के हृदयों में, मन में, मस्तिष्क में हँसी खुशी, मुस्कान, प्रसन्नता की सुरभि, शांति या चिंतन के स्पर्श के सोए बीजों को प्रस्फुटित कर उन्हें अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित कर सकें। अगर मेरी कोई रचना पाठकों के हृदय सागर में कोई लहर कोई तरंग लाकर हलचल मचा सके तो मैं अपने इस प्रयास को सफल मानूंगा। आपके विचारों एवं पत्रों का मैं हमेशा पूरे प्यार, स्नेह और सम्मान के साथ उत्तर ढुंगा यह वादा रहा। मन से रचनाओं को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया जरूर दें।

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

आपका अपना ही

पंडित श्रीराम कुमार तिवारी 'सुमन'

राज्य स्तरीय दीर्घकालिक वरिष्ठ पत्रकार सौभाग्य भवन,

दुर्गा चौक, गुडरूपारा, वार्ड नं. 27 महासमुंद-493445

जिला- महासमुंद, छत्तीसगढ़ (भारत)

***

सद्गुरूदेव श्री श्री १०८ श्री स्वामी श्री गुलाबदास जी निर्मोही नागा जी महाराज ( डोंगर बाबा )
श्री पंच रामानंदीय निर्मोही अखाड़ा, श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या जी . संस्थापक श्री नागा जी दरबार,श्रीराम जानकी मंदिर,
श्री गुलाबेश्वर महादेव मंदिर - सलिहा डोंगर, पोस्ट आफिस कोदोमेरी, जिला नुवापाड़ा, उड़ीसा.
परमकृपापात्र शिष्य - श्रीराम कुमार दास निर्मोही.....

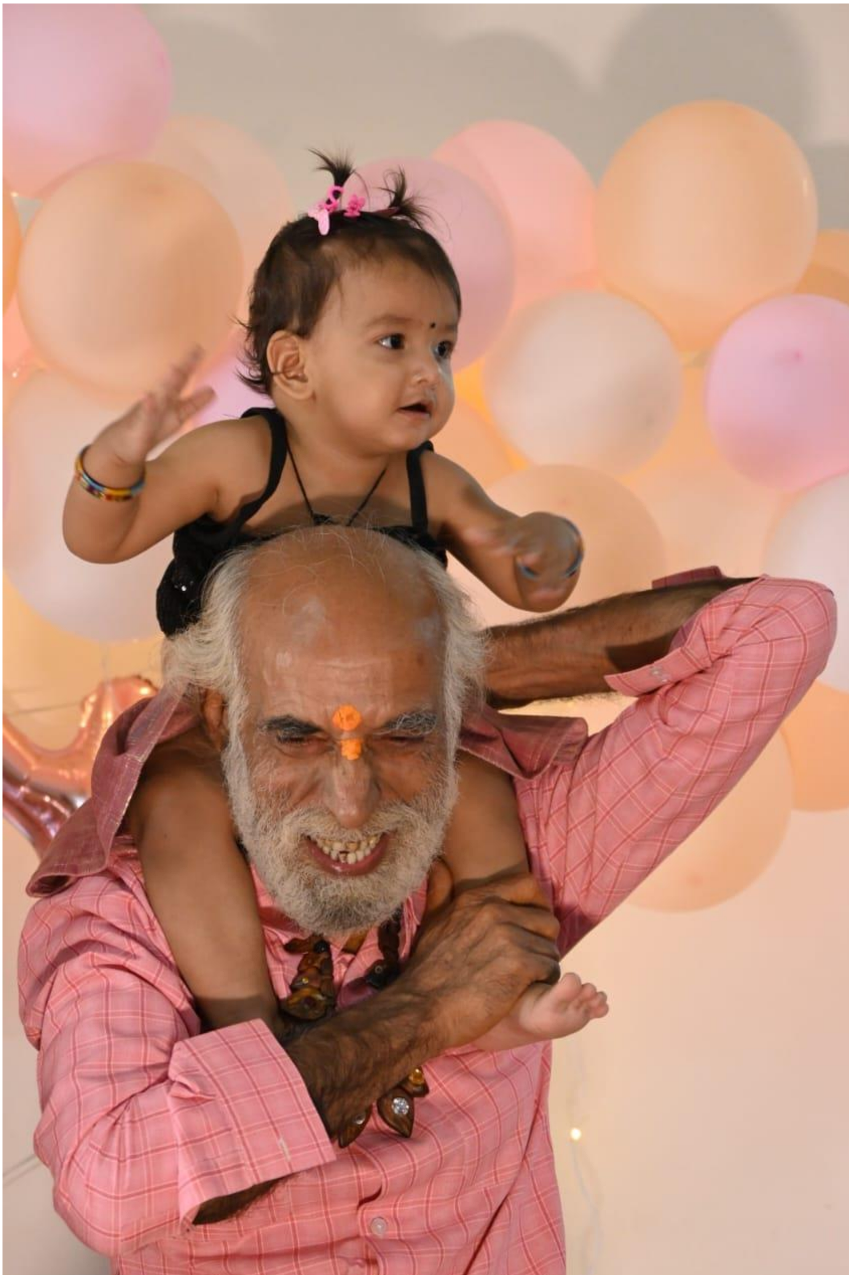

पूज्यनीया माँ स्वर्गीया श्रीमती उर्मिला देवी तिवारी और परमपूज्य पिताजी
स्वर्गीय श्री कामता प्रसाद तिवारी

कवि श्रीराम कुमार तिवारी सुमन परिवार के साथ।

# अनुक्रमणिका


माँ मुझको ऐसा वर दे ............ 1

माँ सरस्वती श्रृंगार वंदना ............ 2

प्रथम पूजनीय हुए गणेश ............ 3

प्रथम मनाऊँ गुरुवर को ............ 4

सदगुरू चरण वंदना ............ 5

बैठो गुरु की नाव में ............ 6

हे डोंगर बाबा, शत शत प्रणाम ............ 7

गुरु मेरे मान सरोवर हैं ............ 8

सहता है जो सब, साहेब है ............ 10

गुरु है सत्य अविनाशी ............ 11

स्वामी तुम हो मैं हूँ दास ............ 12

आएँगे राम मुझ तक ............ 13

शिव तुम ही तारो ............ 14

आरती उतारों माँ भारती की ............ 15

शहीदों को श्रद्धांजलि ............ 17

माँ का आँचल है सबसे प्यारा ............ 18

जै छत्तीसगढ़ ............ 19

बिदा के बेरा ............ 20

गुरतुर गुरतुर मखना ............ 21

माँ कहती थीं ............ 22

निधि होती है बेटी घर की ........ 23
बस एक तुम हो मेरी माँ... ........ 25
कर्ज नहीं लुंगा........ 26
मैं सुमन हूँ........ 27
रुपिया पुराण........ 31
गोस्वामी तुलसी दास जी के नाम पाती........ 39
महासमुंद में होरी रे रसिया... ........ 41
सत्य का आलोक दो ........ 43
प्रेम या प्यार........ 44
पैमाना........ 45
प्रीत हमारी ........ 46
क्या गुजरी है?........ 47
आज का आदमी........ 49
देवता........ 50
तन्हाई ........ 51
इस शहर में यार........ 52
तनाव........ 53
नूर........ 54
सामने आ जाती हो ........ 55
लफ्ज़........ 56
जख्म ........ 57
कल्पना ........ 58
यौवन की देहरी ........ 59

आँखें ...........................................................................................61
गजल लेंगे हुजूर ? ...........................................................................62
मेरी आवाज.......................................................................................63
अफसाना ..........................................................................................64
चाह....................................................................................................65
हमारा प्यार.......................................................................................66
खयालों में .........................................................................................67
लियाकत ...........................................................................................68
जवाब ................................................................................................69
बन्दगी................................................................................................70
खामोशी .............................................................................................71
जिंदगी................................................................................................72
फलसफा.............................................................................................73
दीवानापन .........................................................................................74
चुंबन..................................................................................................75
नशा....................................................................................................76
भरम ..................................................................................................77
आरज़ू.................................................................................................78
यकीन ................................................................................................79
वफा....................................................................................................80
सच है ................................................................................................81
तकदीर................................................................................................82
इन्सानियत..........................................................................................83

विवशता....................................................................................... 84
तुम्हारे लिए................................................................................... 85
राह अगर भूलूँ................................................................................. 86
माफी .......................................................................................... 87
प्यार नहीं टूटेगा ............................................................................. 88
मेरी जिन्दगी ................................................................................. 89
ताज ........................................................................................... 90
तहजीब ........................................................................................ 91
मंजिल ......................................................................................... 92
सोचता रहता हूँ... ........................................................................... 93
खुदी की अहमियत ........................................................................... 94
प्यार ही प्यार ................................................................................. 95
मेरी स्मृतियों में.............................................................................. 96
दास्तां .......................................................................................... 98
स्पर्श........................................................................................... 100
परदा........................................................................................... 101
दामन.......................................................................................... 102
बुत............................................................................................. 103
अमीरी ........................................................................................ 104
मुहब्बत........................................................................................ 105
एतबार ........................................................................................ 106
कर्ज............................................................................................ 107
फैसला ........................................................................................ 108

हासिल ........................................................................................109

जवानी........................................................................................110

राह ............................................................................................111

कोई गम नहीं..............................................................................112

बाहर अमी न खोज......................................................................113

आशीर्वाद ....................................................................................114

बाकी सब ठीक है... .....................................................................115

मानव जीवन में परिवर्तन ..............................................................117

सुखमय हो जीवन सारा.................................................................119

सौ गीत है सौगात में.....................................................................120

मेरी नजर में "सुमन हूँ मैं" आपके लिए... ..........................................121

# माँ मुझको ऐसा वर दे

जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती
मेरी वाणी में मैंया तू अमृत स्वर भर दे,
मस्तक धरूं तेरे चरणों में, हाथ, मेरे सिर धर दे।
जय सरस्वती, जय सरस्तवी, जय सरस्वती, जय सरस्वती
सबकी शरण छोड़ कर देवी शरण तुम्हारे आया,
अब तक तरस रहा हूँ देवी दर्शन दो महामाया
मेरी कविताओं में अपनी कृपा दृष्टि कर दे।
जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती
ललित सुकोमल रुप तुम्हारा, चंद्र ज्योत्सना चमके,
अलंकार की छटा निराली अंग-अंग तव दमके,
अपनी वीणा की स्वर लहरी मेरी कविता में भर दे।
जय सरस्वती, जय सरस्तवी, जय सरस्वती, जय सरस्वती
कोई माने या ना माने देवी मैं मानूंगा,
निज जीवन को- निज वाणी को देन तेरी मानूंगा,
वसुधा को मुझ पर गौरव हो माँ मुझको ऐसा वर दे।
जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती

***

# माँ सरस्वती श्रृंगार वंदना

हे माता, वाणी की देवी सरस्वती,
हंसासन आरूढ़ रूप है दिव्य तुम्तारा।
रत्न जड़ित है मुकुट भाल पर कुंदन का,
दिव्य तिलक जिस मस्तक पर तुमने धरा।
सूरज चाँद जड़े हैं हर आभूषण में,
स्वर्ण कांति विद्युत सी आभा बिखर रही।
चार भुजा वाली है देवी सरस्वती,
यह निखरी सँवरी सृष्टि तुम्ही से निखर रही।
हे वीणापाणि, दिव्य तुम्हारी वीणा है,
जिसकी लय पर ब्रम्हाण्ड थिरकता रहता है।
एक हार में चारों वेद सुशोभित हैं,
एक हाथ में मोती की माला धरता है।
अद्भुत साड़ी में दिव्य कंचुकी अद्भुत है,
हाथों में बाजूबंद चूड़ियाँ भरी हुई।
उंगलियाँ सुशोभित आभा लिए अंगूठियाँ,
पैरों में पायल चरण कमल पर धरी हुई।
स्तुति करूँ, प्रार्थना करूँ, माँ करूँ आरती,
मुझको दो विद्या, बुद्धि सभी गुणशील भारती।
चरण शरण हे सिद्धि दायिनी विद्या दात्री,
धन जन वैभव विनय हमें दो हे वर दात्री।

***

# प्रथम पूजनीय हुए गणेश

माता पिता की कर परिक्रमा,

प्रथम पूजनीय हुए गणेश। माता है अवनि,

पिता है नभ, गणपति का यह शुभ संदेश।

जग में उनका है नाम आज,

जो माता-पिता के भक्त हुए।

हे राम धन्य तब जीवन है,

जो पितृ वचन अनुरक्त हुए।

उस श्रवण कुमार को याद करो,

अंधे माँ बाप की आँखों का तारा।

माँ बाप की सेवा करते करते,

निज प्राणों को जिसने हारा।

ऐसा कोई वरदान नहीं इस जग में,

माता पिता की कृपा से जो न मिले।

सुमन खिलकर महकते आशीष से,

हर सुमन माँ बाप के साए में खिले।

हमें वे प्यार देते हैं, हमें संस्कार देते हैं,

भले हालात कैसे हों वे संग हर बार देते हैं।

अरे माता पिता प्रगट भगवान हैं जग में,

यही वो हैं जो पापी को भी भव से तार देते हैं।

***

# प्रथम मनाऊँ गुरुवर को

---

प्रथम मनाऊँ, मैं तो प्रथम मनाऊँ,

प्रथम मनाऊँ गुरुवर को।

तुम ही गजानन हो मेरे,

तुमसे मनाऊँ हरिहर को।

गुरुजी है परम दयालु,

श्री नागा जी परम कृपालु ।

सुमनों से जादा सुकोमल,

नरसिंह अवतार, नरसिंह अवतार,

माया अपरंपार, माया अपरंपार ।

लो सुमन लक्ष्य पर पहुँच गया,

जिन चरणों में विश्राम मिले।

उन चरणों पर शीश रखा,

तब प्रकट रूप सियाराम मिले।

सियाराम मिले तब धन्य हुआ,

तब धन्य हुआ यह जन्म अहो।

और धन्य हो गुरु माता पिता,

कहो पुत्र सीता सीताराम।

***

# सदगुरू चरण वंदना

हे डोंगर बाबा करूणा के सागर,

शरण में आपकी हो सिद्धि उजागर।

कृपा की दृष्टि से दूर करें मेरा अज्ञान,

भक्ति के पथ पर दें हमें अपनी पहचान।

मन में बसाएँ गुरु आपका ही ध्यान,

आपके चरणों में गुरू है सच्चा ज्ञान।

स्वतंत्र करो प्रभु सांसारिक बंधन तोड़कर,

तम से ज्योति की ओर ले चलो मन मोड़कर।

हे गुरुदेव बैठा हूँ मैं आपके ही सहारे,

जीवन नैया मेरी भवसागर से पार उतारें।

हरेक पल हरेक क्षण आपका सुमिरन करता रहूँ,

अपने सारे कर्मों को गुरू चरणों में अर्पण करता रहूँ।

रामकुमार दास की है प्रार्थना लीन हो जाऊँ भजन में,

गुरू मेरे सजन है खो जाऊँ सजन में।

गुरू की कृपा सबसे महान, गुरू दयालु और महान,

आओ प्यारे भक्तों मिलकर परम गुरू का करों गुणगान।

***

# बैठो गुरु की नाव में

आओ पधारों, मेरी नाव में,
ले चलता हूँ भव के पार।
बीच सफर में मुझे बताना,
क्या पाया जीवन का सार।
माता-पिता गुरु और भाई,
कहाँ गए सब रिश्तेदार ।
छूट गए सब जिनको जोड़ा,
टूट गया जग से हर तार।
बैठो गुरु की नाव में आकर,
बोलो जय जय सीताराम।
डोंगर बाबा की जै बोलो,
बोलो जै जै श्री हनुमान ।
पलक झपकते पार उतारूँ,
इतना मुझको तुमसे प्यार।
एक बार विश्वास अडिग हो,
यह पाया वेदों का सार।
अगर नाव डगमग हो तो तुम,
संशय तनिक नहीं करना।
डरना मत, भयभीत न होना,
गुरु पर भक्ति अटल रखना।

***

# हे डोंगर बाबा, शत शत प्रणाम

डोंगर बाबा के सलिहा डोंगर की पावन छाया,
जिस तरफ उठाओ नजर डोंगर बाबा की माया।
पहाड़ जंगल की हरियाली में चली भक्ति की बयार,
सच कहता हूँ जग में गुरू चरणों की महिमा अपार।
पवन की सरसराहट देती है यहाँ गुरू का संदेश,
पानी की कलकल धारा है सुख का प्रदेश।
पर्वत शिखर की ऊँचाई पर कर लो गुरू का ध्यान,
सुमन यहाँ करते हैं गुरुजी का महिमा गान।
हर सुबह यहाँ सूरज देता है गुरू का प्रकाश,
और सांझ ढले नीरव शांति में गुरू का आभास ।
चहचहा रहा हर पंछी सुन लो गुरू की वाणी,
बूढ़ा वट वृक्ष सुनाता गुरू की अमर कहानी।
सलिहा डोंगर की वंदनीय है हर शिला,
गुलाबेश्वर महादेव के रूप में ही गुरू मिला।
भक्तों के मन में बसता है गुरू का स्थान,
सलिहा डोंगर के कण कण में नागा जी की लीला महान।
श्रीराम कुमार दास गाते हैं सलिहा डोंगर की बात,
जहाँ डोंगर बाबा की बरसती कृपा दिन रात,
मिलकर करें हम गुरू का गुणगान,
डोंगर बाबा की महिमा का सम्मान

***

# गुरु मेरे मान सरोवर हैं

ॐ जय श्री डोंगर बाबा स्वामी जी गुरु जय श्री डोंगर बाबा स्वामी जी

श्री गुरू डोंगर बाबा स्वामी सुखसागर मान सरोवर हैं।

मैं हँस हूँ मान सरोवर का गुरू मेरे मान सरोवर हैं।।

गुरु चरणों में संतोष शांति जीवन में उजियारा आया।

गुरु उपदेशों से मिली राह गुरू ने ज्योतिर्मय दीप जलाया।

गुरू भक्ति की लहरें उठीं, मन में मधुर संगीत बजा।

तेरे नाम की गुरू माला जपते राजी जिसमें तू उसमें रजा।

तेरे दर्शन से जीवन पावन गुरू की वाणी अमृत समान।

तेरे सानिध्य में बीता हरेक पल, जीवन बना उत्सव महान।

तेरे आशीष से मिली शक्ति सुख गौरव और साहस पाया।

गुरू तेरे प्रेम में डूबे रहकर जीवन का सार समझ आया।

गुरू तेरे चरणों की रज से मन का अहंकार मिटाया है।

गुरू तेरे हाथों ने मुझे छूकर के आत्मा को शुद्ध बनाया है।

तेरे उपदेशों की गंगा यमुना और सरस्वती की धार।

तेरे ज्ञान भक्ति की सुधावृष्टि करती भवसागर से पार।

गुरू तेरे नाम का संकीर्तन हर क्षण में सुखदायक राम।

गुरू तेरे चरणों में आके मिलता है मुझको परम आराम।

तेरे चरणों में समर्पण कर दिया ये ही मेरा अर्श है।

गुरू आपके चरण कमलों में पाया आत्मिक उत्कर्ष है

गुरू के आशीर्वाद से मिली जीवन को सच्चे सुख की राह।

गुरू ने इतना प्रेम दिया मैं भूल गया हर दुख और आह।

जय श्री डोंगर बाबा स्वामी जी...

***

# सहता है जो सब, साहेब है

जब जाएगा तू दुनियाँ से, कुछ भी न साथ ले जाएगा।
हर धन जाएगा छूट यहाँ, बस खाली हाथ ले जाएगा।
श्रीराम कृष्ण और परसराम, यश गौरव गाथा छोड़ गए।
कुछ लेकर जाना है जग से, दुनियाँ का यह भ्रम तोड़ गए।
बस पाप पुण्य की दो गठरी, सिर पर ढोकर ले जाना है।
जहाँ गाड़ी घोड़ा गज यान नहीं, वहाँ पैदल चलकर जाना है।
निज अहंकार की गागर को, गुरू के आगे जब पटक दिया।
तन मन धन निर्मल कर डाला, हर पाप गुरू ने झटक लिया।
है राम नाम मुख का गहना, बाहर भीतर हरिमय रहना।
सहता है सब जो साहेब है, बस सोच यही सबकी सहना।
यह काम क्रोध मद लोभ मोह, जीवन भर पाप कराते हैं।
गुरु का सिर पर हो वरदहस्त, सब भक्ति मुक्ति मिल जाते हैं।

***

# गुरु है सत्य अविनाशी

---

गुरू है सत्य अविनाशी, गुरू कभी मर नहीं सकते।

सभी रिश्ते दगा देंगे, दगा गुरु कर नहीं सकते।

कोई जाकर नहीं आता, मगर गुरु जाके आएँगे।

वो मेरी कौन सी झोली है, जो गुरुजी भर नहीं सकते।

जो मांगा वो सभी पाया, न मांगा वो भी पाया है।

दिया है तार जीते जी, वरन हम तर नहीं सकते।

न नगुरा ज्ञान ही पाया, न नगुरा निडर हो पाया।

जो सगुरा गुरुमुखी बन गए, वो किसी से डर नहीं सकते।

जो दीपक प्रेम का हमने, गुरु के संग में बारा है।

वो नेगुरा के हृदय में, गुरु बिना कभी बर नहीं सकते।

सुमन लो चढ़ गए सारे, गुरु के चरण कमलों में।

गुरु के चरण कमलों में चढ़े, 'सुमन' वो झर नहीं सकते।

***

# स्वामी तुम हो मैं हूँ दास

नर हूँ मैं नारायण हो तुम,

राम हूँ मैं रामायण हो तुम।

काव्य बना मैं अनहद धुन तुम,

मेरे गीत के गायन हो तुम।

बलहीन हूँ मैं बलवान हो तुम,

मैं निर्बल हूँ बलराम हो तुम।

मैं शरणागत तुम अभयदान,

मुझ राधा के घनश्याम हो तुम।

तुम हो दीप अखंड प्रज्ज्वलित, मैं उस दीप की बाती।

कवि हो तुम मैं गीत वो बना, जिसको दुनियाँ है गाती।

पथ हो तुम, मैं पथिक तुम्हारा,

तुम वायु मैं साँस हूँ,

तुम बिन मैं अस्तित्वहीन हूँ,

तुम से ही मैं खास हूँ।

रजकण मैं हूँ तुम आकाश,

स्वामी तुम हो मैं हूँ दास।

मैं तेरे कदमों की थिरकन,

तू मेरे जीवन का महारास।

***

# आएँगे राम मुझ तक

श्रीराम को समझना, बहुत सरल है।

क्योंकि श्रीराम, स्वयं ही बहुत सरल है।

अमृत के लिए दावा, करते नहीं कभी भी।

शिव त्याग कर सुधा को, पीते सदा गरल है।

गुरु की कृपा से जिसको, श्रीराम खुद बता दें।

वह जानकर प्रभु को, श्रीराम बन गया है।

अस्तित्व खुद का खोकर, श्रीराममय हुआ जो।

वो खोज में प्रभु की, खुद राम बन गया है।

मीरा मिली थी, एक दिन राधा के श्याम से।

शबरी को दिया दर्शन, सीता के राम ने।

आएँगे राम मुझ तक, विश्वास है ये मेरा।

मुझे है न कोई काम, अब दुनियाँ के काम से।

***

# शिव तुम ही तारो

---

हे महादेव पार्वतीनाथ जै जै शंकर,

हे महाकाल, कालों के काल हे अभ्यंकर।

हो कृपा नाथ दासों के दास की विनती सुन,

नटनागर, नटवर चरण शरण दो प्रलयंकर।

तुम देव देव देवाधिदेव त्रिगुणात्मक स्वामी,

मैं दीन हीन कामी लोभी कपटी हूँ निपट हरामी।

अब भवसागर से तुम ही पार उतारों,

नामी में नामी एक तुम्हीं हो नामी।

हे नाथ धधकते मन मरघट में सुमन खिला दो,

अपने नयनों से एक बार मेरे नयन मिला दो।

गंगा सी शीतल कर दो मन के मरूथल को,

हर कलुष मिटा कर ऊँकार की ज्योति जला दो।

हे महादेव हैं शरण तुम्हारी पार उतारो,

अब कोई तारणहार नहीं शिव तुम ही तारो।

रख दिया शीश हे रामेश्वर तव चरणों में,

सब तुम पर छोड़ दिया शंकर तारो या मारो।

***

# आरती उतारों माँ भारती की

आरती उतारों माँ भारती की,

जन्मभूमि की पावन माटी की।

काश्मीर से कन्याकुमारी तक विशाल,

श्रद्धानवत हर भारतीय का भाल।

है मुकुट तेरा हिम की चोटी,

चहुँ दिशा तुम्हारी है ज्योति,

गंगा जमुना की निर्मल धारा,

अवनिश करें तेरा जयकारा।

चमके खेतों में हरियाली,

दर्शनीय सूरज की लाली।

तीनों मौसम खुशियाँ लाएँ,

सारी दुनियाँ को हर्षायें।

ज्ञान, तपोबल, शौर्य अपार,

माँ तेरे आँचल में मेरा संसार।

तू वेद पुराणों की है पुण्य वाणी,

हे भारत माता तू है महादानी।

दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती काली तू है माँ,

जन्मभूमि तेरी सबसे आली तू है माँ।

मन के भावों से आरती के दीप जलें,

हर भारतवासी के मन में माँ प्रीत पले।

राम कृष्ण तेरी गोद में खेले जै जै भारतमाता,

जन्मभूमि सर्वस्व हमारी जैसे जननी माता।

माता तेरे चरण कमलों में अर्पित मेरे गीत,

जहाँ खड़ा हो भारत मेरा वहाँ विजय श्री जीत।

***

# शहीदों को श्रद्धांजलि

भारत के एक सौ चालीस करोड़ लोग, नतमस्तक है,
श्रद्धावनत हैं, भारत के बलिदानी, वीर शहीदों के लिए।
वे वीर शहीद जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए रण यज्ञ में,
रणभूमि में, हँसकर दी प्राणाहुति ।
तब देव सुमन वृष्टि कर कहते है, तुम धन्य हुए, तुम धन्य हुए।
ओ देश भक्त, ओ मातृभक्त तुमको अनंत अभिनंदन है,
जिस पर तुम न्यौछावर हो प्रिय वह माटी नहीं है चंदन है।
युग युग में नाम तुम्हारा हो, हे वीर गति के अधिकारी,
तुम हो शत्रुंजय, मृत्युंजय तुम हो काली की किलकारी।
भारत माता की मस्तक पर, है मुकुट शहीदी लालों का।
यह देश ऋणी है शहीदों का। शत्-शत् प्रणाम,
शत्-शत् प्रणाम, ओ देश भक्त दीवानों।
श्रद्धा के सुमन समर्पित हैं, भारत माँ के सच्चे संतानों।

***

# माँ का आँचल है सबसे प्यारा

---

माँ का आँचल है सबसे प्यारा,

उसमें छुपा है मेरा संसार सारा।

उसकी ममता की स्नेहिल छाँव में,

बहती पयोनिधि गंगा की धारा।

माँ की लोरी में है जादू,

माँ की मुस्कान में गुरू का प्रकाश।

माँ तेरी बिना अधूरी मेरी दुनियाँ,

माँ तेरी जगह मेरी जिंदगी में है रवास।

सुमन के दिल से बह निकली,

माँ की ममता भरी प्यारी माँ की कहानी।

हर शब्द में बसी है माँ मेरी,

बसी है, रमी है ममता की स्नेहिल रवानी

माँ के आंचल की शीतल छाया में,

बचपन की मीठी यादें बसती हैं।

माथा चूम के जब माँ बरसाती है आशीर्वाद,

दीवाली के दीपों से जीवन की राहें सजती हैं।

***

# जै छत्तीसगढ़

भारत में सबसे आगे बढ़,

जै छत्तीसगढ़, जै छत्तीसगढ़।

गढ़ना है हमें नव छत्तीसगढ़,

बढ़ माँ के सपूत तू भविष्य गढ़।

मेहनत से छत्तीसगढ़ होगा सशक्त,

आ रहा है उज्ज्वल छत्तीसगढ़ का वक्त।

हम एक रहें और नेक रहें,

हम सबकी रगों में लाल रक्त।

प्रगति का दामन थामों ओ छत्तीसगढ़ के लाल,

आलस्य और कामचोरी के तुम बन जाओ काल।

सर्वस्व निछावर कर दो मातृभूमि के चरणों में,

खुद बन जाओ रक्षा खातिर तुम छत्तीसगढ़ की ढाल।

***

# बिदा के बेरा

बहिनी तोर बिदा के बेरा,
भाई के दुई नैना बरसे।
आशीर्वाद इही देवथौं,
जीवन भर सुख संपत्ति सरसे।
मोर मया ला बाँध ले बहिनी,
तै अचरा के छोर में।
दुनों कुल की लाज निभाबे,
तै सतिता के जोर में ।।
मोर भांचा भंचुरा से घर,
बने रहे हरियाली रे।
पूनम छाये रहे सबर दिन,
मिटै अमावस काली रे ।
सास ससुर के आँख के तै,
काजल के रेखा बन जाबे।
पतिव्रता ऐसन रहिबे ते,
सीता के लेखा बन जाबे ।
जानत हावों जावत खानी,
तोरो जी अब्बड़ तरसे।
बहिनी तोर बिदा के बेरा,
भाई के दुई अँखियाँ बरसें ।

***

# गुरतुर गुरतुर मखना

---

दही मही में मिठाये मखना अरे मखना...

मोर गुरतुर गुरतुर मखना अरे मखना...

पहिली मेथी म बघारौ फेर हरदी मिरचा डारौ,

तब नून डार के चखना

दही मही में मिठाये मखना अरे मखना...

दही मही मा घोर के बेसन मखना में

झपा संगे संग डबकावत साग ल रखना

अरे मखना... दही मही म मिठाये मखना।

डुब डुब डुबकी कस चुरही जम्मो घर भर ल पुरही,

अब भात के संग धमकत्त मोरे मखना...

दही मही म मिठाये मखना।

***

# माँ कहती थीं

माँ कहती थीं बेटा,
तू कर्जा की रोटी मत खाना।
बिना नमक बासी खा लेना,
नमक उधारी मत लाना।
जो फँसता है इस दलदल में,
कर्जा में धँसते जाता है।
गले में अपने डाल के फँदा,
निज कर से कसते जाता है।
मजबूरी कितनी भी हो पर,
कभी उधारी मत लेना।
कठिन समय में धीरज धरना,
मदद सभी को तुम देना।
नेकी जो भी हम करते हैं,
लौट के वापस आती है।
कृति का जैसा रूप बनाओ,
वैसी ही बन जाती है।
कर्ज उधारी बरबादी है,
इनसे बच बच कर चलना।
माँ की बातें भूल न जाना,
जीवन भर तुम सुख करना।

***

# निधि होती है बेटी घर की

---

बेटी क्या होती है!

क्या होती है बेटी बोलो ?

दुनिया के सारे रिश्तों से,

नातों से बेटी को तौलो !

परी जादुई होती है ये,

हँसी खुशी मुस्कान की।

पिता के दिल की धड़कन बेटी,

ये राहत है जान की।

वो घर की खिलखिलाहट है,

हवा की सरसराहट है।

वो कोयल का मधुर स्वर है,

वो मन की चहचहाहट है।

निधि होती है पिता के जिदंगी की,

पिता के सपनों की बेटी ताबीर होती है।

वो दौलत से बड़ी दौलत,

अरे वरदान है बेटी,

वो अपने बाप की सबसे बड़ी जागीर होती है।

भाग्यवान के घर जन्में बेटी अवतारी,

है भरा अपरिमित प्यार है बेटी प्यारी।

बेटी की आँखों में पलते हैं बाप के सपने,

हो पिता सुखी ये उसके अपने आप के सपने।

***

# बस एक तुम हो मेरी माँ...

यकीन खुद पे है, खुद पे एतबार है मुझे,

बस एक तुम हो मेरी माँ, जिससे प्यार है मुझे।

तुम्हारी याद जो आए वो मुस्कान याद आती है,

माँ तेरी गोद और उसकी शान याद आती है।

रहा तेरी गोद में मैं, तू मेरी गोद में रहना,

जननि तेरी कृपा अदभुत, बना तेरी क्रोड़ का गहना।

मुझे मालूम है हर जनम तू मेरी माँ बनती है,

मेरी जिंदगी में माँ तू दीवाली का समाँ बनती है।

माँ तू मेरे दिल में रहना, इस घर में रहना,

मैं पुकारूंगा तुझे, अवनि के हर स्वर में रहना।

***

# कर्ज नहीं लुंगा

किसी से कर्ज नहीं लुंगा, न उधारी खाऊंगा।
मैं तेरी सीख को माँ, जिंदगी भर निभाऊंगा।
अगर घर में न हो नून, तो बिन नून के खाना।
कोई हँसकर भी दे जो, भूलकर भी कर्जा में मत लाना।
ऋण करके जग में घी पीना, जब तक जीना सुख से जीना।
यह नीति कभी मत अपनाना, अपनाना मतलब विष पीना।
ये लोन, किश्त, इंस्टालमेंट, इनके चक्कर में मत फँसना।
बेटा ये भयावह दलदल हैं, इस दलदल में तुम मत धँसना।
माँ तेरी बात मानकर के, यह जीवन सुख से बीत गया।
भवसागर पार उतर आया, जग हारा और मैं जीत गया।

***

# मैं सुमन हूँ

मैं सुमन हूँ डाल पर इतरा रहा हूँ,
मस्त झोकों में पवन के झूमता हूँ।
अष्ट सिद्धियों और नव निधियों के बीच,
प्रकृति को सौरभ लुटाता चूमता हूँ।
मदिर मेरा रूप जिसको देखकर,
भ्रमर गुन्जन कर रहा उद्यान में।
प्यार की अठखेलियों के मधु क्षण में,
दे रहा सौरभ नित दान में।
शशि की शीतल रश्मि हँसाने आती है,
लोरी गाकर मधुप सुलाता है मुझको।
मलयानिल धीरे-धीरे हौले-हौले,
प्रिय विरह गीत गा आज रूलाता है मुझको।
मैं सुमन प्यार का ऐसा कोष असीम हूँ,
सारी दुनियाँ को मैं सुगंध से सींच रहा।
जब विरह की मारी प्रिया सिसकियाँ लेती है,
अनुभव होता है कोई मुझको खींच रहा।
मैं रहा काँटों में, पर हँसता रहा,
गीत मैं आनन्द के गाता रहा।
सुमन हूँ मन का मिला सौन्दर्य है,

दानकर निज स्नेह हर्षाता रहा।

सुमन को क्या दान का प्रतिदान दोगे,

प्यार का बदला प्रिया बस प्यार होगा।

एक पलड़े पर सुमन यदि बैठ जाये,

दूसरे पलड़े पर रखना संसार होगा।

देवताओं पर चढ़ा वह 'सुमन' हूँ मैं,

मैं चढ़ा हूँ देवियों के शीश पर श्रृंगार बनकर ।

राम ने सीता के अंगों को सजाया सुमन से,

जिस सुमन पर महादेवी रो पड़ी मनुहार बनकर ।

सुमन का गन्ध है गौरव और सुषमा का खजाना,

जिन्दगी हो जिन्दगी तो सुमन जैसी जिन्दगी।

अणु-अणु को सौरभ देता है कण-कण की साँसे मदमाता,

मैंने बनकर सुमन सारे जग की, की है बँदगी।

राधा की वेणी में गुथा हुआ हूँ सुमन प्रिये,

सीता के शीश के केशों का श्रृंगार सुमन हूँ।

स्वर्ण किरण जिसको आ प्रथम जगाती है,

श्रृंगार प्रियतमे ! तेरा पहला प्यार सुमन हूँ।

सुमन सोने की थाली में प्रतिबिम्ब बनाया है,

प्रकृति नाचती थिरक थिरक कर जिन तालों में।

हम सुमन बोलते हैं जिनकी भाषा तुम समझ न पाये,

हम सुमन बने श्रृंगार सुमन के ही बालों में।

हम सुमन है, साधना की ज्योत्सना के लौ प्रथम,
दान कर सौरभ सदा उन्मुक्ति का संदेश देते।
वारते हैं विश्व पर हम प्रात ही तन की सुगन्ध,
आँसुओं को दर्द के मुस्कान का हम वेश देते।
हम सुमन ही जीत पाये जिन्दगी के दाँव को,
जिन्दगी से टूटकर रोता मिला इन्सान भी।
हम कभी रोते नहीं हैं मुस्कुराते हैं हमेशा,
पीर अपनी बचाकर करते हँसी का दान भी।
हम सुमन हैं प्रकृति के वरदान प्रिय,
सुधामय वसुधा के हम सिंगार हैं हम सुमन हैं।
सृष्टि में सौन्दर्य का वरदान पाया सुमन ने,
सौन्दर्यमय सुरभित हृदय में प्यार हैं हम सुमन हैं।
सुमन का है रूप प्राणों से भी प्यारा नयन में,
हृदय में है प्रणय का सौरभ भरा संसार।
छलकती है तीव्र झोंकों से सुधा ही सुमन की,
प्यास है उस पार लेकिन प्यार है इस पार।
लक्ष्मी की पूजा मुझसे ही आराधित होती सरस्वती,
पैदा होता है मुझसे ही दुनियां का सिरजनहार।
रति कामदेव के तीरों का श्रृंगार किया है मैंने,
प्रणयी का प्रणय वासना का रति कामोत्तेजक प्यार।
श्वेत, श्याम, रतनार, लाल, नीले, पीले, द्युति हरित,

बहुरंगी रंगों को मुझसे ही आयाम मिला।
सुमन जिन्दगी की हँसती मुस्काती जीवित प्रतिमा,
मन ही नहीं सुमन मुझको मुस्काता नाम मिला है।
मेरे शूलों में पीड़ा है, पीड़ा में करता क्रीड़ा,
दीपक के लौ की आभा हूँ पहचानों प्रिय यदि चाहो।
मैंने आमंत्रित किया विश्व के पीरों को, टीसों को,
आमंत्रण लो स्वीकार करो ओ दुनियाँ भर की आहों।

***

# रुपिया पुराण

रुपया पुराण सुन ध्यान लगा,
कवि धरी रहन दो कविताई।
कविता से रूपया नहीं मिलते,
साहित्य से कब रोटी आई।
लक्ष्मी की पूजा होती है,
जो बंगलों में घूम रही।
लो कवि की मधुमय वाणी भी,
उसके चरणों को चूम रही
रुपयों का भाव सबसे,
तेजी से चढ़ रहा है। अब ज्ञान भी पढ़ाई,
रूपयों में पढ़ रहा है।
आँख कान मुँह है रुपया,
रुपया ही है अब हाथ पाँव।
रुपया ही चलता है प्यारे,
रुपया बिन सूने नगर गाँव।
रुपयों से ही बनती है,
भगवान की प्रतिमाएँ।
रुपयों से होती पूजित,
कलाकार की प्रतिमाएं।

रुपयों की लीला मंदिर में,

रुपया बैठा गुरुद्वारों में

रुपया मस्जिद, गिरजाघर में,

रुपया है देश के नारों में।

रुपया है आशीर्वाद भी, और श्राप है रुपया।

रुपया ही है सरकार, खुदा आप है रुपया।

रुपयों का है विज्ञान,

और ज्ञान भी रुपयों का।

रुपयों की तपस्या है,

है ध्यान भी रुपयों का।

रुपयों से ही बाजार है,

खुद बाजार है रुपया।

हर चीज बिक रही है,

खरीददार है रुपया।

रुपया है सारा पुण्य,

हर पाप भी रुपया।

रुपया है बहन-बीबी,

माँ-बाप भी है रुपया।

रुपया से कायम है आशा,

रुपया प्रभाव की परिभाषा।

रुपयों से गूंगा बोल उठे,

ऐसी है रुपयों की भाषा।
रुपयों में बिकता है दूल्हा,
रुपयों में है बिकती डोली।
हर जान की कीमत है रुपया,
रुपया खेले खूनी होली।
रुपयों में बिकी श्रद्धा,
और भक्ति भी रुपय में।
लक्ष्मी का रुप रुपया,
है शक्ति भी रुपय में।
गुरु दक्षिणा है रुपया,
रुपया है गुरु ज्ञान।
रुपयों की खनक कहती,
रुपया ही है भगवान।
रुपयों से है श्रृंगार,
रुपयों से ढली हाला।
रुपयों में सुमन बिकते,
रुपयों में बिके माला।
रुपया खरीद लेता है प्यार,
रुपया सबके दिल का करार।
अब तो रुपया लैला का रुप,
रुपया ही इश्क, मजनूँ का यार।

रुपया का ऐसा चमत्कार,
रुपया से मिल जाता है प्यार।
रोटी भी रुपयों में बिकती,
रुपया ले आता है बहार।
पहले रुपया 'कुछ' होता था,
अब 'सब कुछ' रुपया ही रुपया।
वाणी रुपया, हँसना रुपया,
जगना रुपया, सोना रुपया।
रुपया का मद बड़ा नशीला है,
रुपया बिन चेहरा ढीला है।
रूपया बिन है सूख अकाल,
रुपया है तो सब गीला है।
हीरा मोती सोना चाँदी,
इन सबका मोल है रुपयों में।
सुन लो अब कवि की कविता में,
मिलता हर बोल है रुपयों में।
कालेज से के.जी. तक,
रुपयों का बोलबाला।
काली है कमाई पर,
रुपया नहीं है काला।
रातों की नींद रुपया,

और दिन का चैन रुपया।

बहरों का कान रुपया,

अन्धों का नैन रुपया।

रुपयों से विहग जैसे,

उड़ जाओ गगन में।

शादी में भी रुपय है,

रुपये ही लगन में।

रुपयों से ही होते हैं,

सागर के पार हाथी।

रुपयों से बनाते हैं,

नदियों पे पुल भी साथी।

रुपयों से हमने देखे,

अविश्वसनीय करिश्में भी।

सौ सौ रुपए के नोट ही,

है प्यार के चश्में भी।

रुपया पुराण जो जन पढ़े,

मन में ध्यान लगाय।

रामकुमार कहे शपथ से,

सुख सौभाग्य घर आय।

रुपयों से हमने देखे,

अविश्वसनीय करिश्में भी।

सौ सौ रुपए के नोट ही,

है प्यार के चश्में भी।

रुपया पुराण जो जन पढ़े,

मन में ध्यान लगाय।

रामकुमार कहे शपथ से,

सुख सौभाग्य घर आय।

पैसा ही सबसे बड़ा है,

पैसा ही काम आता है.

रूपियों से हो दीवाली,

बिन रूपय है दिवाला ।।

रूपिया तो चाहिये ही,

है सामने दिवाली।

इस बार तो अपनी भी,

हो शान कुछ निराली ।।

रूपिया से बने बीसा,

रूपिया से बने तीसा ।

सब चालीसा से बढ़कर,

रूपियों की ये चालीसा ।।

आराधना रूपय की,

है साधना रूपय की ।

है प्रेम भी रूपए का,

है वासना रूपए की ।।

रूपयों में सिद्धि ले ले,

रूपयों में रिद्धि ले ले ।

हो गांठ में रूपय तो,

मूर्ख भी बुद्धि ले ले ।।

रूपया बनाये मंत्री,

रूपया बनाये नेता।

रूपया है मेरे, भारत के भाग्य का प्रणेता।।

वेतन है नाम इसका,

है नाम इसका कीमत ।

है मूल्य नाम इसका,

शुभ नाम इसका रिश्वत ।।

है रूप इसके लाखों,

एक नाम है नजराना।

एक नाम दक्षिणा भी है,

नाम एक खजाना ।।

भेंट चढ़ावा नाम है इसका,

खन खन सर-सर रव हो।

यह रूपिया ईमान बदल दे,

इसकी सदा विजय हो।।

यह जहां जायेगा जीतेगा,

कलयुग में है यह रामबाण।

जो पाठ करे सौ बार इसे,

दुख दर्द मिटे मिल जाये त्राण।।

रूपियों की देवी महालक्ष्मी,

मुझको अपना अक्षय वर दो।

दीवाली में मेरे घर को,

सौ-सौ के नोटों से भर दो।।

दीवाली की रात में पाठ करे सौ बार,

सिद्ध होय हर कामना कहते रामकुमार ।

इति श्री रामकुमार तिवारी "सुमन" विरचित कलियुगी श्री रूपया चालीसा संपूर्ण ।

***

# गोस्वामी तुलसी दास जी के नाम पाती

युग दृष्टा, मानस सृष्टा,
अंजुरी भर शब्दों से आचमन है...
हाथ मेरे पवित्र नहीं हैं,
इसलिए, आपके ही हाथों से,
आपको ही नमन है...।
हे हुलसी के तुलसी,
आत्माराम की आत्मा,
तुम्हे प्रेषित है यह पाती...,
जिसे पढ़ कर धधक उठेगी आपकी छाती..,
आपके श्रीराम कलियुग में पादुका सहित चले गए वनवास पर,
अरण्य प्रदेशों में मंगल है, नगरों में दंगल है।
अब सजती है कलियुग में सीता,
उर्मिला, मांडवी एवं श्रुतिकीर्ति
तंग जीन्स, सलवार और कमीज में,
कलियुगी राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न
महसूस करते हैं आधुनिकता,
उनकी इस बदतमीज तमीज में...।
वाल्मीकि जी की रामायण
और आपके श्रीरामचरित्र मानस पर

कितनी ही फिल्में बन गई,
जिसमें सीता पारदर्शक परिधान में आती है,
दर्शकों के सामने ठुमका लगाकर गाती है।
पिया बिन मन नहीं लागे.....
सखी मोरा जोबन जागे....।
और फिल्मी राम उपवन के किसी कुंज में छिपे,
मुस्कुराते रहते हैं। इसलिए गुरुदेव,
भेजिए सतयुगी श्रीराम को,
हनुमान सहित, पावन करें प्रदूषित भू-धाम को।
विप्रवर, साहित्याकाश के मयंक,
अन्यथा घोर अनर्थ हो जाएगा,
विच्छिन्न, विदीर्ण मर्यादाओं के बीच,
श्रीराम चरित्र मानस व्यर्थ हो जाएगा।
परमपूज्य पूज्य विप्रवर,
पावनता से अपरिचित, अनभिज्ञ हाथ मेरे अपवित्र हैं।
इसलिए आपके ही पावन हाथों से,
आपको आचमन है,
अंजुरी भर शब्द सुमनों सहित नमन है....।

***

# महासमुंद में होरी रे रसिया...

अरे हाँ... सररर... सुन लो मोर कबीर....

महासमुंद में होरी रे रसिया... होरी रे रसिया,

बरजोरी रे रसिया... महासमुंद में होरी रे रसिया...।

नंगे नेताओं की नंगी चालों से हैरान शहर,

कालिख पुते चेहरे उस पर हरकत भी छिछोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...।

व्यापारी सब लूट रहे, आग लगी बाजार में,

सबके हाथ रक्त रंजित हैं, हुई विषैली रोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...। छँटे छटाए....

अस्पताल-थाना-न्यायालय रंगे हाथ काले चेहरे,

कुँआ न ऐसा कोई बाकी जिसमें भांग न घोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...।

संविधान की जली होलियां, सोया भूखा बचपन,

विवश मूल अधिकार लटक गए बांध गले में डोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...।

पत्रकार सब परेशान हैं विज्ञापन का निकला तेल,

संपादक पर चढ़े प्रबंधक,

प्रेस की आड़ में चोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...।

'सुमन' कहें इस पनघट में सब ही नंगे नहा रहे हैं,

बुरा न मानो होली है जी,

बात नहीं ये तोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...।

बुरा बहुत यदि लगे दोस्तों,

दो रोटी जादा खाना,

होली में मेरे संग मिलकर लगवा जाना रोरी रे रसिया।

महासमुंद में होरी रे रसिया...

***

# सत्य का आलोक दो

घने अंधरों, तूफानों में अनवरत जो दीया जलता है,
बेउम्मीदों की आशाओं का वही तो दीपक बनता है।
आँधी और तूफानों से भी कभी नहीं जो डरता है,
ऊबड़ खाबड़ पथ पर गिरकर जो हर बार संभलता है,
यह संसार चोट देता है जो हर पीड़ा सहता है।
सच होते हैं सुख के सपने, जो सपने वह बुनता है,
जलता है विश्वास दीप, तूफाँ अपना सिर धुनता है।
इंसान खरा वह जो संघर्षों से कभी न घबराए,
हिमालय सी चुनौती भी स्वीकारे और मुस्काए।
विश्वास और श्रद्धा के सहारे चलते जाए,
सुमन की बात मानों सफलता कदमों में बिछ जाए।
चलो तुम भी बनो दीपक, जलो, आलोक दो,
उजालों को जो रोकें, उन्हें तुम रोक दो।
खुशी के गीत गाओ, जग को आलोकित करो,
तमस मन का मिटे वह सत्य का आलोक दो।

***

# प्रेम या प्यार

बँटी जिंदगी अनगिनत संस्करण में,

रखें आपको कौन से संस्मरण में।

जहाँ प्रेम या प्यार लिखा हुआ है,

रहा हाशिये में मैं उस उद्धरण में।

अवनि में लिए हैं अनेकों जनम पर,

मिली जिंदगी बस तुम्हारे वरण में।

अगर जानती हो, मुझे भी बता दो,

कि क्या कुछ मिलेगा अंतिम चरण में।

कहीं कोई साया सुकूँ दे न पाया,

चलें आज हम प्यार की ही शरण में।

***

# पैमाना

तुम चाहो तो गा सकते हो गजल हमारी,

छलक रहा है इनमें दर्द भरा पैमाना।

प्यार के दो बोल शायर गा रहा है आज,

महक उठा है मधुमय साकी का मयखाना।

किसने तुझे छला ऐ मेरे पावन मन,

तुम ही जान सके ना यह मैंने जाना।

खोलकर बैठा हूँ टाँके जख्म के मैं आज,

सच्ची है खबर आई तुम्हें है आज आना।

गजल में है रूप उनका रूह उनकी,

तुम्हारी गजल तुमको है सुनाना।

***

# प्रीत हमारी

तुम समझ नहीं पाओगी मेरा दिल की भाषा।
बस जलता रहूँ दीप सम यह मेरी चिर अभिलाषा ।।
तुम कानन कुसुम छटा की, अनुपम सौंदर्य कली हो।
मैं वह पीड़ित मर्यादा जो काँटों में पली हो।
क्या देह मिलन हो जाने से संतुष्ट रहोगी।
चिर मिलन आत्मा का होने पर रुष्ट रहोगी?
अमृत सागर में जाकर क्यों मधु की अभिलाषा ?
इतना आगे बढ़ने पर क्यों विस्मृत पथ की आशा ?
हो चंद्र ज्योत्सना जैसी निर्मल यह प्रीति हमारी।
फिर स्वयं देखना झुकती जाएगी दुनिया सारी।
चातक और चंद्र नहीं मिल पाये युगों युगों से।
पर चातक ताक रहा है अविराम अथकित दृगों से।
यह पीड़ा ही चातक जीवन का अंग बना है।
मीरा की पीड़ा से अब मेरा संग बना है।
सौंदर्यमय सुख छोड़ों आकर पीड़ा भी झेलो।
मेरे हिस्से की कड़वाहट कुछ तुम भी ले लो।
हम मर जाएँ पर साथी शाश्वत हो प्रीति हमारी।
हर प्रेम पिपासु आकर मानेगा रीत हमारी।

***

# क्या गुजरी है?

तुमने, कहा था कभी मुझे हीरा,

पर मैंने पत्थर होना ही स्वीकार किया।

मैंने, तुमसे कहा था, पत्थर हूँ स्वीकार मुझे है,

हरेक जहर से प्यार मुझे है।

आह हमेशा पी लेता हूँ, ओंठ हमेशा सी लेता हूँ।

काँटों पर पैदल चल जाऊँ, क्षमता है जिन्दा जल जाऊँ।

पर तुम शीश झुका जब रोई,

क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है,

क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...?

खुद की बातें खुद से कह ली,

भरी उदासी होली सहली।

दीवाली में दीप जलाए, कैसे?

तुमको क्या बतलाएँ..।

हर सुख गिरवी रखा दाँव में,

जी लेता हूँ हर तनाव में।

पर तुम शीश झुका जब रोई,

क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...

क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...?

दीवारों को रोते देखा,

सिसक-सिखक कर सोते देखा।

तोड़ा मैने स्वयं सेहरा,
खुद का भूला आज चेहरा।
हर सुख से सन्यास सह लिया,
प्यासे मन का प्यास सह लिया।
तिर आए जब नयन तुम्हारे,
तब-तब आँसू बहे हमारे।
पर तुम शीश झुका जब रोई,
क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...।
क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...?
हम चुप थे आकाश रो उठा,
पागल सा मधुमास हो उठा।
रूदन हो गए मेरे गीत,
ठुकरा दी इस जग की प्रीत।
कहाँ मिलेगा सुख का डेरा?
सूरज को खा गया अंधेरा।
लाश स्वयं की ढोते हैं हम,
अश्रु नयन में बोते हैं हम।
पर तुम शीश झुका जब रोई,
क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...
क्या बतलाऊँ क्या गुजरी है...?

***

# आज का आदमी

यहाँ का आदमी कैसा है मुस्काता है रो रो कर,
डरे ये जिन्दगी से और खुश है जिंदगी खोकर !
फसल ये काटता है जिन्दगी भर बस अंधेरे की,
तमाशा ये है हर पल लौटता है रोशनी बो कर !
मुहब्बत करने वालों में वही दस्तूर जारी है,
जिसे चाहो, जिसे पूजो, उसी को मार दो ठोकर !
शराबी है यहाँ पर कौन? ये बू कैसी आती है?
नजर मुझ पर टिकी है क्यूँ, चला था मैं तो मुँह धोकर !
मुझे जिंदो से ज्यादा प्यार मुर्दों से लगा होने,
मिलेगा चैन उनके रूबरू ही कब्र में सोकर !
कोई कैसे यकीं करले मुहब्बत भी हकीकत है,
हुई दुनियाँ नहीं अपनी, रहे दुनियाँ के हम होकर !

# देवता

हमीं निर्दोष होकर दोष सारे कब तलक सहते,
हमेशा देवता भी देवता बनकर नहीं रहते।
मुझे तुम देवता कहकर कभी लज्जित नहीं करना,
यहाँ इन्सान भी अपमान पाकर चुप नहीं रहते।
तुम्हारी रूप की नदिया में चाहे विश्व बह जाए,
नदी जिनके सहारे हैं कभी वे तट नहीं बहते।
सुना है प्यार तो मंदाकिनी की श्रोत पावन है,
तुम्हारे प्रेम को क्यों लोग गंगाजल नहीं कहते ।
मैं पारस हूँ, उन्होंने पर कभी छूकर नहीं देखा,
बना देता मैं कंचन तो मुझे पत्थर नहीं कहते।
चली आई बहारें इस नगर के सारे उपवन में,
खिला लो फूल गमले में उसे सावन नहीं कहते।

# तन्हाई

कटेगी जिन्दगी चलते हुए यूँ ही तनहाँ,
मिलेंगे हाथ हम मलते हुए यूँ ही तनहाँ।
में कैसे मान लूँ कि जिन्दगी में प्यार भी है,
गुजर गई उमर पलते हुए यूँ ही तनहाँ।
नहीं जो खुद के, उन्हें मान लिया है अपना,
उदास साँस को छलते हुए यूँ ही तनहाँ।
हमारी आँख का पानी भी बेशकीमत है,
मिला तजुर्बा है गलते हुए यूँ हर तनहाँ।
तुम्हारा चाँद है, तारे हैं, मेरा कुछ भी नहीं,
मिला था सूर्य भी ढलते हुए यूँ ही तनहाँ।
डरा सकेंगे अंधेरे तुम्हें है नामुमकिन,
करूंगा रोशनी जलते हुए यूँ ही तनहाँ।

***

# इस शहर में यार

चींटियों की है कतार इस शहर में यार,

अब गुड़ सा हो गया है प्यार इस शहर में यार।

बेहद अजीब है यहाँ अंदाज कत्ल के,

अपने अजीज हैं कटार इस शहर में यार।

किसपे यकीं करें यकीन किस पे ना करें,

डोली हैं लूटते कहार इस शहर में यार।

बजता था सुरों में कभी मेरे मन का साज,

तोड़े गए चुन-चुन के तार इस शहर में यार।

तारे नहीं, मुझे तो कोई चाँद चाहिए,

लगता है बहुत अंधकार इस शहर में यार।

रख दी हँसी धरोहर-मुस्कान बेच दी,

रोए हैं बहुत जार-जार इस शहर में यार।

शायद इसी शहर के तुम भी हो आदमी,

कैसे हो तुम पे एतबार इस शहर में यार।

***

# तनाव

रहते हो तुम तने-तने में भी तना - तना,
मौसम है खुशगवार मगर में हूँ अनमना।
बरसात में तनाव की कहीं घुल न जाऊँ मैं,
पत्थर की तुम बनी हो पर मिट्टी का में बना।
माना कि मेरा प्रेम तुम्हें रास न आया,
पर क्या करूँ 'सुमन' है मुहब्बत से ही सना।
आँखों में थरथरा रहे इस दर्द की कसम,
ऐ जानेमान तू हो गई मेरी रूह में फना ।
आँखों में मेरी झाँककर क्या खोज रही हो,
अंतस में मेरे दर्द का कोहरा भरा घना।

***

# नूर

---

आपके हाथों की मेहंदी पे लिखी गजल,
आपके गालों की सुर्खी पे लिखी गजल।
आँख में है आपके कोई खुदाई नूर,
भौंहों के तीरे नीमकश पे लिखी गजल।
नया दर्द है खुदारा इस इश्क मिजाजी में,
आपके हुस्न बेपनाह पे लिखी गजल।
सुमन को जानते हो जिसपे गजल होती है,
मेरे मोहब्बत तेरे नाम पे लिखी गजल
मेहंदी से हथेली पर मेरा नाम लिख लिया,
मैंने तेरे अन्दाजे बयाँ पे लिखी गजल।

***

# सामने आ जाती हो

ऐसा तुमने कौन सा जादू किया है मुझ पर,
याद आते ही मेरे सामने आ जाती हो।
वो बड़े बड़े नयन ज्यों चकोर की चितवन,
ख्यान बन दिलो दिमाग पे छा जाती हो।
लगता है जैसे साथ है ये जनम जनम का,
मेरे लिए ही नये देह घर के आती हो।
मैं जागते हुए भी तेरा देखता हूँ सपना,
मेरा रंगीन हर सपना तुम्हीं बनाती हो।
कभी तन्हाइयाँ जब घेर लेती है मुझको,
कूक कोयल की बनके तुम मुझे बुलाती हो।
वो तेरा झूमकर सावन की घटा बन जाना,
अपने चंचल आँचल में मुझे सुलाती हो।

***

# लफ्ज़

आपकी आँखों में है क्या देखा,
हमने इनमें है दो जहाँ देखा।
आपको देख कर देखा हमने,
आप ही आप है जहाँ जहाँ देखा।
प्यार का लफ्ज होंठ पर आया,
आज ये हमनें तुम में क्या देखा।
तुम बनी हो यहाँ मेरी खातिर,
दिल में हमनें तुम्हें यहाँ देखा।
आपकी आँखों के इशारों के लिए,
हमने क्या क्या नहीं सहा देखा।

***

# जख्म

तमाम उम्र किसी को यूँ आजमाते रहना,

प्यार लब पर नहीं और दिल में समाते रहना।

प्यार में भी दिया जाता है धोका,

किसी की झूठी कसमें खाते रहना।

मैं नहीं जानता क्या है मुहब्बत,

हमारी तुम दुवाएँ पाते रहना।

आपने बोलना सिखा दिया है हमें,

हमने सीखा था दर्द अपना छुपाते रहना।

तुम मेरे जख्म की कराह को गजल समझो,

हमें मंजूर है तमाम उम्र कराहते रहना।

***

# कल्पना

---

संभल संभल के चलो,
कमर न लचके गोरी।
ये जमाना है बुरा,
सोच समझ के गोरी।
तुम्हारे ओंठ पनघट है,
हमारे ओंठ गागर हैं।
हमारा प्यार है प्यासा,
तुम्हारा रूप सागर है।
तुम्हें हूँ खोजता रहता,
नयन के मुखर सपनों में।
तुम्हें ढूँढा है गैरों में,
तुम्हें खोजा है अपनों में।
तुम्हारी कल्पना साकार है,
दिल की हवेली में।
लिखा है नियति ने मेरी,
मुहब्बत ही हथेली में।
तुम्हारे रूप में मैंने,
किसी देवी को पूजा है।
मेरे मन में तुम्हीं तुम हो,
रूप कोई न दूजा है।

***

# यौवन की देहरी

यौवन की देहरी पे आई हो तुम,
थोड़ी सी आहट पे आएगा प्रीत।
पलकों के घूँघट से शरमाओं आज,
शायद ले अंगड़ाई मेरे ये गीत।
जाने क्यों गीतों को भायी हो तुम...
यौवन की देहरी पे आई हो तुम...
सूनापन अखरेगा, ढूँढोगी साथ,
जाने फिर बीतेगी कैसे ये रात।
सपनों में आऊँगा अनजाना मैं,
सोचोगी प्रियतम मत होती प्रभात।
बिरहा की तान बनके छाई हो तुम...
यौवन की देहरी पे आई हो तुम...
मुझ संग तुम मौन रही दर्पण से बोली,
नयनों की भाषा कब समझोगी भोली ?
भ्रम में मत रह जायें मेरे ये गीत,
वरना मैं तोड़ेंगा सदियों की रीत।
बोले मत दुनियाँ हरजाई हो तुम...
यौवन की देहरी पे आई हो तुम...
छनके मत पायल, मत खनके कंगना,

शर्मा जाएगा मेरा ये अंगना।
नयनों का काजल है कैसा अनजाना,
नजरों में बसकर बन बैठा दीवाना।
कह दो काजल से पराई हो तुम...
यौवन की देहरी पे आई हो तुम...
प्यार कहाँ पाता जो तुमने दे डाला,
कौन मुझे पहनाती बाहों की माला।
मौन मुखर कर दो तो मुखबिरत हो सरगम,
खोलो निज ओठों में लगा हुआ ताला।
फागुनी उमंग संग में लाई हो तुम...
यौवन की देहरी पे आई हो तुम...
रात भर जो सपने बुने आपके लिए,
मोर में जो फूल चुने आपके लिए।
तुम सा नहीं कोई भी सारे जहान में,
ताने भी बहुत हमने सुने आपके लिए।
जन्मों की कसम संग में खाई हो तुम...
यौवन की देहरी में आई हो तुम...

***

# आँखें

हैं भाषा विज्ञान आपकी ये आँखें,
लक्ष्य भेदी संधान आपकी ये आँखें।
वेद शास्त्र का ज्ञान आपकी ये आँखें,
अंतसव्यापी ध्यान आपकी ये आँखें।
प्यार का है तूफान आपकी ये आँखें,
नौ रत्नों की खान आपकी ये आँखें।
हुस्न की है मुस्कान आपकी ये आँखें,
सुधा सरस मधुगान आपकी ये आँखें।
कलाकार की शान आपकी ये आँखें,
यौवन का सम्मान आपकी ये आँखें।
सौरभमय हैं तान आपकी ये आँखें,
हमको जीवनदान आपकी ये आँखें।
मेरा अनुसंधान आपकी ये आँखें,
बरछी तीर कमान आपकी ये आँखें।
देती मुझे जबान आपकी ये आँखें,
प्यार तपस्या ज्ञान आपकी ये आँखें।

***

# गजल लेंगे हुजूर ?

गजल बिकती है,

आप गजल लेंगे हुजूर ?

मेरे सपनों से बना ताजमहल लेंगे हुजूर ?

मेरी बरसों की कमाई ये मेरी गजलें हैं,

चंद रुपयों में प्यार की ये फसल लेंगे हुजूर ?

जिगर के आज अपने टुकड़े बेचता हूँ जनाब,

माल औरों से अलग, माल असल लेंगे हुजूर ?

गजल कमसिन भी है, नादाँ भी हैं, शोख भी हैं,

कमल से ओठ हो जिसके वो कमल लेंगे हुजूर ?

आँसुओं की ये नई नस्ल देखिये साहिब,

कई नस्लें हैं, कौन सी नसल लेंगे हुजूर ?

कदरदानी के किस्से आपके हैं महफिल में,

देख तो लीजिए, नहीं आज, तो कल लेंगे हुजूर।

***

# मेरी आवाज

---

जब कभी जुल्म के खिलाफ उठेंगी आवाजें,
सबसे पहले मेरी आवाज सुनोगे यारों।
बेगुनाहों को सजा दी नहीं जा सकती है,
छोड़ दो कैद अब सब परवाज सुनोगे यारों।
कोई दो बोल मुहब्बत के नहीं कहता है,
मुझसे तुम प्यार का आगाज सुनोगे यारों।
मुस्कुराओगे जहां वहीं गजल कह दूंगा,
आज बस प्यार का अन्दाज सुनो यारों।
भेद जो तुमने अपने दिल में छुपा रखा है,
मेरी गजलों में वहीं राज सुनोगे यारो।
तुमने एक बार मुझपे नजरे इनायत की है,
एक नजर का वो असर आज सुनोगे यारों।
उसके आने की खुशी में शमा जलाई है,
झनझनाते हैं दिल के साज सुनोगे यारों।

***

# अफसाना

करोड़ों रूप यों लेता है दिल का एक अफसाना,
बना लेता है अपने प्यार में लाखों दीवाना।
तुम्हारे मुस्कुराने पे हमारे वाह निकली है,
नहीं कुछ था मगर हमने दिया है दिल का नजराना।
तुम्हारे रूप की कीमत कोई क्या आँक पाएगा,
तेरे सौभाग्य के सिन्दूर से आँचल का भर जाना।
तुम्हारे सामने मजबूरियों की ऊँची दीवारें,
हमारे सामने हैं प्यार के अल्फाज का गाना।
तुम्हारे वास्ते माँगी है रब से जिन्दगी हमने,
दुवाएँ हमने दी है आपको, सुनना जो सुन पाना।
उसी को जिन्दगी कहता हूँ, जो तेरे साथ बीती है,
हुआ हूँ दूर जबसे, मौत का मतलब है पहचाना।

***

# चाह

मेरे गीत बनें मेंहदी, इतनी सी चाह है,
यदि तुमसे प्यार मेरा कोई गुनाह है।
सुन्दर हो जैसे सावन, फागुन सी जवानी,
तू खुद है गुलाबी कि शराबी निगाह है।
गुजरा हूँ बनके मौसम, तेरी उंगलियों को छूकर,
स्पर्श ने बताया हम एक राह हैं।
ठंडी हवा का झोंका, यदि दर्द लेके आए,
वो मेरा इशारा है, वो मेरी आह है।
यह साधना है मेरी, गीता इसे बना दूँ,
ये सिर झुका के हँसना तौबा पनाह है।

***

# हमारा प्यार

मेरा दिल बुलाता है तुमको एक बार,
आओ गजल में कर दूँ तुम ये ये जाँ निसार।
जोगी बने हैं रानी देखो तुम्हारे प्यार में,
देवी बनाया तुमको ऐसा हमारा प्यार।
तुम जीतती रही हो मैं हारता रहा हूँ,
मैं हारकर भी तुमको देता रहा गलहार।
तुमने बदन छुआ तो सुर ऐसे जाग उठे,
जैसे कि जाग जाएँ वीणा के सभी तार।
मन मयूर नाचें अलकें खुली तुम्हारी,
है मेरा प्यार आपने हँसकर किया स्वीकार।
दिल खुश था शाद होके था आसमान में,
है एतबार एक बार फिर आएगी बहार।

***

# खयालों में

आप आया जरूर कीजिए खयालों में,
जिन्दगी बीत रही है मेरी सवालों में।
तेरी नाराजगी का खौफ मेरे दिल में है,
मैनें बोसे लिए थे लब औ सूर्ख गालों में।
तेरे गेसू के रूबरू है पेश मेरी गजल,
छोड़कर छाँह में उलझा रहा बवालों में।
मैं शराबी नहीं आँखों ने है बदनाम किया,
जो नशा इनमें है साकी, कहाँ वो हालों में।
गीत मेरे हैं तरन्नुम तो तुम्हारे ही हैं,
वस्ले जजबात है रौशन तेरे खयालों में।

***

# लियाकत

किसके खातिर तोड़ूँ मैं आकाश कुसुम,
कोई भी इन फूलों का हकदार नहीं।
जिनकी चौखट पर मस्तक झुका दिया मैंने,
वे ही कहते हैं हमको तुमसे प्यार नहीं।
किसी जन्म में मुझसे टूटा दीप कोई,
इस जनम में मुझको मिल पाया उजियार नहीं।
क्यों नदी दूध की उनकी खातिर लाये हम,
जिनकी आँखों में आँसू की इक धार नहीं।
हर रात कटी है व्याकुलता की सीमा में,
मेरी खातिर यह खुशियों का संसार नहीं।

***

# जवाब

---

तेरी खातिर मैं ताजमहल बन जाऊँगा,
तुम गाओ तो खुद आज गजल बन जाऊँगा।
तेरे जो सपने चूर-चूर हो बिखर गए,
उन ख्वाबों का मैं स्वयं बदल बन जाऊँगा।
मैं तुझे बिठाकर सात आसमाँ के ऊपर,
तेरी अलकों में मेघ सजल बन जाऊँगा।
बिंदिया चंदा की, तारों की नुपूर पहनो,
मैं सिन्दूरी सौभाग्य अचल बन जाऊँगा।
यूँ तो जीवन है सिर्फ सवालों का दर्पण,
मैं हर सवाल का मुखरित हल बन जाऊँगा।

***

# बन्दगी

आज इतने हम अपने आप ही से शर्मसार हैं,
कहते नहीं है बन रहा कि तुमसे प्यार है।
मैंने चंदा समझ के तेरी बन्दगी की है,
आसमाँ में सितारे यूँ तो सनम बेशुमार हैं।
कहकशाँ की तरह चमका है हुस्न परदे में,
हुस्न वाले तेरी महफिल में हम भी जाँनिसार हैं।
आज अपनी निगाह में मिलादो मेरी नजर,
लोग देखें निगाह में भी हाय कितनी धार है।
हुस्न ये बेपनाह, रूप की देवी हो तुम,
मैंने फैला दिया स्वागत में लो बाहों का हार है।

***

# खामोशी

---

जहर उगलने वाले सारे नाग न जाने क्यों चुप है,

मैं तो जलने को उत्सुक हूँ आग न जाने क्यों चुप है।

नयन प्रतिक्षारत है मेरे किसी नई पीड़ा की खातिर,

बड़ा अनमाना छत पर बैठा काग न जाने क्यों चुप है।

बंशी का स्वर खींचो इतना मन दरवेश नाच उठे फिर,

पाँव थिरकने को व्याकुलप् पर राग न जाने क्यों चुप है।

सुमन-सुमन पर रस के लोभी भौंरों ने जब डेरा डाला,

पुलकित हो गई कली लजाकर बाग न जाने क्यों चुप है।

बादल तिर-तिर गए नयन में कोर हो गए गीले-गीले,

उचित उदासी मेरी है पर फाग न जाने क्यों चुप है।

***

# जिंदगी

बोल कितने प्रहर की यह जिन्दगी,
घूँट बन गई जहर की यह जिन्दगी।
किस तरह से हँसेंगे मुस्काएँगे,
त्रासदी इस शहर की यह जिन्दगी।
पूछते हो मुझसे क्यों बेचैन हो,
दे के मुझको कहर की यह जिन्दगी
मन का अभिशापित महल सूना रहा,
पी रहा हूँ जहर की यह जिन्दगी।
जिन्दगी पर क्या गजल गाएँ सुमन,
जी रहे अंतिम पहर की जिन्दगी।
भोर का सपना हुआ सच कौन सा,
लहर में है लहर की यह जिन्दगी।

***

# फलसफा

माना कि तेरे अंतस में बस पड़े गमों के घेरे हैं,
रोने वाले कुछ सोचा है उनका क्या होगा जो तेरे हैं।
बदनाम प्यार में होने का माना कि तुझको शौक नहीं,
ऐ चाँद बता फिर किस्मत में क्यों तुझको मिले अंधेरे हैं।
तुम घूंट-घूंट विष पीती हो, मैं एक बारगी पीता हूँ,
जीवन दर्शन है अलग किन्तु जो दुख तेरे वे मेरे हैं।
तन का कोई भी आकर्षण अब तक मुझे न बाँध सका,
तन के रंगों को छुआ नहीं पर मन के कुशल चितेरे हैं।
मूरत से मौन खड़े हो क्यूं मौसम है ये मुस्काने का,
हम यायावर हैं ओ साथ दो दिन के अपने फेरे हैं।

***

# दीवानापन

हम दोनों दीवानें हैं क्या?
दीवानों सी बातें करते हैं।
दुनिया मरती है दौलत पे,
हम इक दूजे पे मरते हैं।
तुम हुस्न की जिंदा मूरत हो,
तेरे पाँव में जाँ हम धरते हैं।
तुम जितना जुल्फ सँवार रही,
हम उतना और बिखरते हैं।
रातों को मिला मधुमय चुंबन,
दिन-दिन हम और निखरते हैं।

***

# चुंबन

चुंबन आकर्षक अमिय भरे इन अधरों पर,
हरिणी सी इन आँखों पर मेरा चुंबन है।
सबने धन अपना-अपना बाँट लिया,
तेरा यौवनमय रूप प्रिये मेरा धन है।
कितने फनकार यहाँ आते हैं-जाते हैं,
अपनी गजलों का दर्द फकत मेरा फन है।
यूँ तो कितने प्यारे चेहरे हैं दुनियाँ में,
प्रिय, तेरी आँखों में कितना अपनापन है।
सारा जीवन है जिया दूसरों की खातिर,
तुम संग जो बीता सचमुच वो अपना क्षण है।
लाखों मन होंगे इन लाखों मन वालों के,
जो तुम पर रीझा हाट बीच मेरा मन है।
तुम जहाँ रहो खुश रहो मुस्कुराती रहना,
अपना जीवन तो संघर्षों का एक रण है।

***

# नशा

ओ गमों आज तो हँसने की इजाजत दे दो,
चाँदनी रात है उस पर से हम नशे में हैं।
काश ऐसा हो मेरे गीत पहन के घूँघट,
हाथ में हाथ है उस पर से हम नशे में हैं।
न करना होश की बातें हमारी महफिल में,
गमों का साथ है उस पर से हम नशे में हैं।
मेरी दुल्हन मेरे अशआर में उतर आई,
खड़ी बारात है उस पर से हम नशे में हैं।
बुझाए आग कौन घर की, शहर सूना है,
ऐसे हालात और उस पर से हम नशे में हैं।

***

# भरम

रूप यों बदल कर न सामने आया करना,
सामने बैठ कर तुम यूँ ही शर्माया करना।
हाय रे, प्यार को क्यूँ हमने हकीकत माना,
मुझको इस प्यारे भरम में ही भरमाया करना।
कड़कती धूप में देखो सफर हमारा है,
तुम अपनी जुल्फ की बदली से ही छाया करना।
सोना-चांदी-हीरे मोती चाह नहीं है मेरी,
तुम अपने साथ अपना प्यार ही लाया करना।
जिन्दगी ने तमाम गम ही मुझे दे डाले,
तुम अपनी याद से गम मेरे भुलाया करना।

***

# आरज़ू

दर्द की धुन पे मुझे आज रुलाये कोई,
कितने अंदाज से आवाज लगाये कोई।
छा गए ओंठ पर गजल बनकर तुम ऐसे,
जैसे सरगम पे दिल का साज बजाए कोई।
टीस सी तान उठे चाक जिगर हो जाए,
हूक की कूक मेरी राग में गाए कोई।
जिंदगी भूल है मुरझाए हुए फूलों की,
सिर्फ सौरभ से मेरी साँस सजाए कोई।
आरज़ू है कि कहूँ प्यार तुम्हें करता हूँ,
नयन झुककर हँसें और आज लजाए कोई।

***

# यकीन

---

हमने सौ रूप लिए साज पर सरगम के लिए,
हुस्न और इश्क मिले तब कही हरदम के लिए।
हुस्न और इश्क के है शोख इशारे कितने,
छुवा लबों को मैंने आब ए जमजम के लिए।
लाख दी हमने दुवाएँ ऐ मुहब्बत के खुदा,
जिंदगी देना मुझे उस नजर की खम के लिए।
वो आबरू का मुहब्बत भरा खजाना है,
है जान चीज क्या, है रूह भी कसम के लिए।
पाक दामन पे मेरे आपको न आया यहीं,
जहाँ में है दवा कहाँ कहो वहम के लिए।

***

# वफा

---

तुझे क्या सुनाएँ दिलरुबा जो हाले दिल किया,
गर्दन कटा के रख दिया खुद जानेमन के सामने।
फिर भी मेरी वफा पे देना उलाहना यूँ,
खामोश रहें किस कदर हम जानेमन के सामने।
हाथों में हाथ रखने की दी आपने इजाजत,
गुस्ताख मिजाजी हुई यूँ जानेमन के सामने।
परदे का चलन हमसे सरकार ने किया है,
हँस-हँस के रोई पलकें यूँ जानेमन के सामने ।
ये शेर आखरी हैं तेरी बेवफाइयों पे,
ऊँची न की नजर कभी जानेमन के सामने।

***

# सच है

सच है, सच है, सच है,
मैंने तुमसे प्यार किया है,
यह भी सच है सपनों में,
तुम संग अभिसार किया है।
गजल कहा करते हैं हम भी,
तेरी मस्त जवानी पर,
हमने तेरी आँखों में,
अपना संसार किया है।
हम दोनों के बीच का पर्दा,
आप हटा दें साहिब,
मदमाती आँखों ने देखें,
क्या श्रृंगार किया है।
दिल में हो तुम,
और तुम्हारी जगह हमारे सर पर है,
धूप, दीप, नैवेद्य बिना बाहों का हार किया है।
जयमाला सुरभित सौरभ शाश्वत हो जैसे प्यार,
मैं हूँ एक 'सुमन' जिसका तुमने सिंगार किया है।

***

# तकदीर

अपना दुनिया में कभी कोई कहाँ होता है,
किसकी खातिर मेरे नादान दिल यूँ रोता है।
नसीब लिखने वाला यूँ नसीब लिखता है,
कोई पाता है खजाना तो कोई खोता है।
कोई आता है किस्मत में अंधेरे लेकर,
जिन्दगी भर कोई बस रौशनी ही बोता है।
वो बनाता है मुकद्दर के सिकंदर भी यहाँ,
सुबह उठते ही जो मुस्कान से मुँह धोता है।
तुम हवा में महल बनालो मगर ऐ हमदम,
हरेक आदमी आखिर जमीं पे सोता है।

***

# इन्सानियत

किसी की जिन्दगी में कोई जहर मत घोलो,
किसी का दिल दुखे तुम ऐसी बात मत बोलो।
हरेक दिल में एक ताजमहल होता है,
किसी के दिल को कभी धन के साथ मत तोलो।
हरेक कृष्ण के सीने में एक मीरा है,
हरेक राधिका के मन में बसी पीरा है।
मैं देखता हूँ कोई टूटा हुआ मन जब भी,
गीत में लिख दिया ये कोहिनूर हीरा है।
हरेक राम को तौला गया है त्यागों में,
बलि की वेदी पर बैठी युगों से सीता है।
जला है नेह का दीपक जनम जनम के लिए,
यहां का देवता भी जहर पी के जीता है।
यहाँ के मंदिरों में प्यार पूजा जाता है,
वहीं काफिर है जो मजलूम को सताता है।
कोई जिसका नहीं उसका तो खुदा है यारों,
सच्चा तो सिर्फ एक इंसानियत का नाता है।

***

# विवशता

इस तरह से झेलते हैं हम सभी की बात,
झेलती है जिस तरह से भूमि उल्कापात।
हो गई है धराशायी कल्पना की हर इमारत,
हृदय के गीतों से झड़ गए भावना के पात।
जिन्दगी की सुबह में खिलखिला कर हँस पड़े,
नयन में आँसू भरे हैं जिन्दगी की रात।
चोट सारे पड़ चुके हम दर्द सारे सह गए,
हो सके तो ढूंढिए नूतन कोई आघात।
गीत मेरे गुनगुना कर आप पुलकित हो गए,
गजल गाते आपका क्यों काँपता है गात।

***

# तुम्हारे लिए

तेरी तकदीर में मैं सारे सितारे लिख दूँ,
तेरी जुल्फों में मैं जन्नत की बहारें लिख दूँ।
तेरे ओंठों पे हैं गंगा की मचलती लहरें,
तेरे आँचल में मैं दूध की धारें लिख दूँ।
आपके नयन में सागर की सी गहराई है,
जिनकी मुस्कान पे सपने मेरे सारे लिख दूँ।
आपसे प्यार हुआ, जबसे ये कहा तुमने,
मेरे प्यारे तुम्हें मैं बस मेरे प्यारे लिख दूँ।
करोड़ों रूप यों लेकर मुझे मिले हो तुम,
आज मैं खुद को क्यूँ न नाम तुम्हारे लिख दूँ।

***

# राह अगर भूलूँ...

खड़ी हुई देहरी पर मेरी राह निहारा करना,
अपनी आँखों को गंगा जमुना की धारा करना।
दूर कहीं मैं राह अगर भूलूँ अनजाने पथ में,
राधा बनकर तुम मुझको निज नयन इशारा करना।
ऐसा प्यार कहाँ मिलता है जो तुमने दे डाला,
आँसू से प्रज्ज्वलित ज्योति की निर्मित होती माला।
मौन मुखर हो उठे अगर तुम बोलो मुस्काकर के,
खोलो होठों पर लगा हुआ यह गहन मौन का ताला।
भर दूँ मैं सिन्दूर रहे तुम सदा सुहागन सीता सी,
मेरा हर आशीष सत्य हो ज्यों वाणी हो गीता सी।
हो अखंड यह गीत, अखंडित सदा वाक्य यह मेरा,
जनम जनम की मेरी प्रिये प्रीता मनमीता सीता सी।

***

# माफी

हमने सौ सौ गुनाह माफ किए,
माफ करदो मेरा गुनाह यही।
आपको दर्द हुआ अश्क बहे,
तब से निकल मेरी कराह यही।
घर बना आपके दिल में मेरा,
दिल से निकली है दिल की वाह यहीं।
कितने बदनाम हो गए हैं हम,
गुम हुए थे मेरे हमराह यहीं।
प्यार क्या इक गुनाह होता है,
तुम बता दो मेरा गुनाह यहीं।

***

# प्यार नहीं टूटेगा

सनम वादा करो न तोड़ोगे दिल हमारा प्यार में,
तुम मुझे छोड़ न देना प्रिये मझधार में।
दिल मेरा ले के कहीं भूल न जाना मुझको,
हमने ये जिन्दगी दी आपके अधिकार में।
विहंगम बनके तुम उड़ जाओगी क्या करेंगे हम,
तुम्हारी याद में जीते हुए पल पल मरेंगे हम।
मगर ये तो बता दो प्यास से लबरेज लब अपने,
तुम्हारे बाद कैसे गैर के लब पर धरेंगे हम।
मैं रातों में तुम्हारी चूड़ियों की खनक सुनता हूँ,
मैं सपनों में तुम्हारे नुपुरों की छनक सुनता हूँ।
तुम्हारी जुल्फ को छूकर हवाएँ गुनगुनाती हैं,
मैं उनके गीत में प्रिय आगमन की भनक सुनाता हूँ।
मेरी मानों मेरी सीता हो तुम मैं राम हूँ,
फकत एक नाम हो तुम और मैं भी नाम हूँ।
तुम्हारी पलक उठते ही जगत का मैं सबेरा हूँ,
तुम्हारी पलक झुकते ही प्रिये मैं शाम हूँ।
जनम जनम का साथ हमारा जनम जनम न छूटेगा,
मन मेरा खुद से रूठे पर तुमसे कभी न रूठेगा।
यह सच है कि ताजमहल की हस्ती भी मिट जाएगी,
प्यार हमारा अमर रहेगा कभी नहीं यह टूटेगा।

***

# मेरी जिन्दगी

साथ अगर वे न देवे जिनके संग जीने की इच्छा है,
तो भी जीवन को जीता है यदि इन्साँ सचमुच खरा हुआ।
मेरे खुलकर हँस पड़ने का दुनियाँ कई अर्थ लगाती है,
बस एक तुम्ही ने पहचाना अंतस तक दर्द है भरा हुआ।
मैं कभी - कभी तुमको अपना कहने की हिम्मत करता हूँ,
क्योंकि गिनती के कुछ क्षण मैं खुद को अपनापन देता हूँ।
मन की निर्मलता को कोई अब तक भी दाग न लग पाया,
भावों की कोमलता से बहुत दूर तुमको अपना तन देता हूँ।
ज्यों शांत झील के पानी में तूफान यकायक आता है,
बस वैसे ही कुछ स्मृतियाँ मेरे मन को मथ जाती है।

***

# ताज

खुशबू रहेगी जब तलक फूलों के रूबरू,
इंसान को इंसान का लिहाज रहेगा।
खुद ही खुदा कहा था ऐ यार इश्क को,
हम दोनों पे उसी खुदा का राज रहेगा।
जिनको नशा चढ़ा है मुहब्बत का ऐ सुमन,
मरकर भी मुहब्बत पे उन्हें नाज रहेगा।
छोड़ों न गजल दर्द की है बेपनाह दर्द,
लब आपके हिलेंगे दिल का साज रहेगा।
ईसा है कौन इश्क का अब आजमाइये,
काँटों का फिर से ईसा का ताज रहेगा।

***

# तहजीब

---

अश्रु नयनों में रहो लेकिन उसे रहो कुछ ढंग से,
आँख से बेशक बहो लेकिन बहो कुछ ढंग से।
सुख या दुख सहने से मैंने कब तुझे रोका सुमन,
जो भी मिलता है सहो लेकिन सहो कुछ ढंग से।
दर्द कहने का हमारा कुछ अलग अंदाज हो,
आँसुओं में ही कहो लेकिन कहो कुछ ढंग से।
कल कहेंगे खंडहर पूरी कहानी गीत की,
आस्मिता मिट जाएगी लेकिन, ढहो कुछ ढंग से।
जिंदगी की उंगलियाँ थामे हुए गुमसुम हो क्यूँ,
मौत हो या जिंदगी लेकिन गहो कुछ ढंग से।
जिंदगी से मौत तक का फासला है मुस्कुराहट,
खुल के हँस देना सुमन चाहे न हो कुछ ढंग से।

***

# मंजिल

गजल को दर्द की सीमा सही, मंजिल तो मिले,
जो दिल के साथ चले ऐसा कोई दिल तो मिले।
मैं मानता हूँ आप इश्क के मसीहा हैं,
आपके प्यार में हम सा कोई गाफिल तो मिले।
आपको हुस्नों मुहब्बत की देवी कह दूँ,
आपसे बढ़के हमें कोई संगदिल तो मिले।
किया है किसने किसे माफ कौन समझेगा,
तुम्हें भी हमसे बड़ा कोई रहमदिल तो मिले।
बुला लो घर में अपने चाँद और सितारों को,
मेरे अंधेरों की खातिर मुझे कंदिल तो मिले।

***

# सोचता रहता हूँ...

कोई हमें फिर पुकारे क्यूँ भला,
दर्द जो देना था तुमने दे दिया।
हमसफर ये रह गए हैं फकत हम,
चैन के संग-संग सफर भी ले लिया।
मैं नहीं कहता मुझे अफसोस है,
पर अगर सोचो कहीं तुम रूठ जाओ।
क्या गुजरती है दिलेनाशाद पे,
दो कदम चलकर अगर तुम छूट जाओ।
क्या खता मेरी अगर तुम याद आओ,
याद ही तो अब मेरा अंजाम है।
भूल जाता काश मैं आगाज अपना,
पर मेरा आगाज ही बदनाम है।
थरथराते ओंठ अब खामोश हैं,
पर जमाना कह रहा मेरा फसाना।
और ताने आज मुझ पर कस रहे हो,
गुनगुना कर आज तुम मेरा तराना।
तोड़ लो रिश्ता भले मुँह फेर कर तुम,
पर पराया तुम मुझे न कह सकोगी।
गैर के संग नाम मेरा जब सुनोगी,
बिन बहाये अश्क तुम न रह सकोगी।

***

# खुदी की अहमियत

अपनी चीजों की देखभाल खुद करना होगा,
जब मौत तुम्हारी आएगी खुद मरना होगा।
अपने आँसू खुद पोंछो, खुद हँसना होगा,
सुख दुख भवसागर में खुद ही सहना होगा।
भीड़ बहुत है लेकिन कौन यहाँ अपना है,
अपनी राह बना, खुद तन्हा चलना होगा।
अपनी छाँव की खातिर खुद ही पेड़ बनो तुम,
धूप लगे तब खुद से खुद को ढकना होगा।
सपनों को सच करने की ख्वाहिश है गर तो,
हर साँस साँस को मेहनता से खुद भरना होगा।
राहें सबकी किस्मत में मिलती है यूँ तो,
मंजिल में पहुँचने मेहनत खुद करना होगा।
सच कह गए सुमन के लफ़्ज़, हरेक बंदे को यहाँ,
अपने अंदर ही अंदर खुद मरना होगा।

***

# प्यार ही प्यार

प्यार ही प्यार में जीवन ये कट गया,
ये अलग बात है मैं रिश्तों में बँट गया।
वो हमसफर था मेरा, हम सफर ही रहता,
ये अलग बात है वो मेरे रास्ते से हट गया।
मैं उसे याद दिलाता कसमों की मुझसे हो न सका,
ये अलग बात है वो पहले ही पहचानने से नट गया।
वो जो गड्ढा था समंदर सा दरमियाँ अपने,
वक्त के रेत की आँधी में वो समंदर भी पट गया।
उछलती कूदती गंगा सी वो बहाकर ले मुझे जाती,
उठाकर सिर हिमालय सा मैं उसके सामने डट गया।

***

# मेरी स्मृतियों में

---

मैं तुमसे प्यार करता हूँ,

तुम मुझसे प्यार करती हो।

मैं तुम पर मरता हूँ,

तुम मुझ पर मरती हो।

यह सच है, सिर्फ शरीर के स्तर पर,

अन्यथा, कई बार तुम भी टूट चुकी हो,

रोटी दाल के सवालों से,

चांवल सब्जी के बवालों से।

और तब तुम्हारा असली रूप सामने आता है,

संयोग के क्षणों का वह मादक रूप,

आइने के पारे सा घुल जाता है।

खाने के प्लेट और नोटों की सरसराहट,

यही तुम्हारा प्रतिबिम्बित यथार्थ है,

मेरे सामने तुम रहती हो मेरी प्रिया बनकर,

तब तक तुम कितनी प्यारी लगती हो,

पर जब तुम बन जाती हो एक खुदगर्ज औरत,

जिसे मेरी नहीं, रूपयों से भरी मेरे जेबों की जरूरत है,

तब, मुझे अपनी पहचान मिल जाती है।

तुम भी स्थापित हो जाती हो,

पथरीले ताजमहल की तरह,

मेरी स्मृतियों के एलबम में...

***

# दास्तां

---

सुमन की मुहब्बत भी इक दास्तां है,
सुमन कौन है आज किसको पता है।
सुमन ख्वाब के हुस्न की एक देवी,
सुमन प्यार की एक सुंदर कता है।
यही है यही है यही है यही,
यही है यही है मेरी जिंदगी।
बने हैं सुमन खुद तुम्हारे लिए हम,
हमारी मुहब्बत न होगी कभी कम।
कसम आज खाले ऐ मेरी मोहब्बत,
हमारे लिए तुम तुम्हारे लिए हम
तुम्हीं हो तुम्हीं हो तुम्हीं हो तुम्हीं,
तुम्हीं हो तुम्हीं हो मेरी जिंदगी।
तुम्हारी निगाहों की तारीफ क्या हो,
जो रौशन है महफिल में खुद वो शमा हो।
तुम्हें पाया है मैंने अपने ही दिल में,
यहाँ हो वहाँ हो बता दो कहाँ हो।
यहाँ हो यहाँ हो यहाँ हो यहाँ,
यहाँ मेरे दिल में हो मेरी जिंदगी।
घनी जुल्फ सावन की काली घटाएँ,

मैं गाता हूँ जिन पर करोड़ों कताएँ।
वो आँखें हैं दो झील सी गहरी गहरी,
वो हैं ओंठ नाजुक या दो लताएँ।
जहाँ में है जो कुछ ऐ हुस्ने जहाँ,
मुहब्बत मुहब्बत मेरी जिंदगी।

***

# स्पर्श

---

सुरों में भर दूँ मैं तेरे बदन की मादकता,
ये मेरा प्यार कह रहा है तुम हो सुंदरता।
मन की अनुमति से स्पर्श तुम्हारा करके,
जान सका मैं परमशक्ति की अनुपम सत्ता।
तुम्हारा रूप हरेक पल सामने है मेरे,
तुम मुझसे लिपटी हुई हो ज्यों कुसुमितलता।
मैंने देवी बना के अर्चना तुम्हारी की,
मनुष हूँ मनुज रहने दो बनो तुम देवता।
हैं कितने प्यार भरे क्षण मुझे दिए तुमने,
हमारी जिंदगी है प्यार की सुंदर सी कता।

***

# परदा

---

तुम मेरे सामने बैठी हो कुछ अधूरी सी,
प्रीत के हुस्न को पर्दे में छुपा रखा है।
तेरे हँसने से ये कैसी खनक उठती है,
सुर सभी तूने ज्यूँ ओठों में छुपा रखा है।
तेरी आँखों में मेरे चिराग जलते हैं,
मेरी राहों को नजरों में छिपा रखा है।
तेरी अलकों में महकी हुई सावन की घटा,
छू के अहसास मैंने दिल में छुपा रखा है।
तुझे सीता कहूँ, राधा कहूँ या कहदूँ प्रिया,
खूबसूरत सा बदन दिल में छुपा रखा है।

***

# दामन

पनघट में मिली तो मुस्कुरा के चेहरा छुपा लिया,
घूंघट में मुँह चुरा के दामन बचा लिया।
हमने जो पूछा आप कुछ कह रही थीं क्या,
हाँ आप कितने अच्छे हैं कहकर लुभा लिया।
क्या आपको जवाब दें, क्या शुक्रिया कहें,
जब दिल को मेरे आपने अपना बना लिया।
इस दिल में प्यार भी है हम भूल गए थे,
यादों का दीप आपने क्यों कर जला दिया।
अफसाना प्यार का शुरू कर तो रहे हो,
इस दिल को कभी धोखा न देना बता दिया।
दुनियाँ का भरोसा नहीं तुम पर ही यकीन है,
तू हुस्न है मैं इश्क हूँ खुदा ने वफा दिया।

***

# बुत

बुतपरस्ती है मेरी शान मेरी जाँ बुत है,
दो जहाँ में मेरे बुत सा कोई कहाँ बुत है।
कभी गया नहीं सिजदे के लिए बुतखाना,
होके खामोश सिर झुका दिया वहाँ बुत है।
राह बतलाए कौन सब यहाँ फरेबी है,
यह बतलाएगा अब मेरा रहनुमा बुत है।
है परेशान शहर के आज हम नहीं रोए,
जिसने मुस्कान दिया एक खुशनुमा बुत है।
कर न पाऊँगा बयाँ हुस्न उस खुदारा का,
उसका एहसान मैं भी बुत, मेरी जुबाँ बुत है।

***

# अमीरी

---

पत्थर हुआ है आपका दिल अमीरी में,
दिल ही नहीं दिखता है दिल अमीरी में।
सोने के ये महल चाँदी के दरीचे,
सोने का ही बन जाता है दिल अमीरी में।
अब आप भी नहीं पहचानते हमें,
अकसर हुआ है आदमी संगदिल अमीरी में।
दिल दिल है मेरा कोई खिलौना तो नहीं है,
समझा खिलौना आपने मेरा दिल अमीरी में।
परिदा है बहुत मासूम इसको छोड़ पिंजरे से,
कभी एहसान करके देख क्या हासिल अमीरी में।

***

# मुहब्बत

---

मुहब्बत का है अनुभव आपको,
तुम्हें कैसे बताऊँ क्या है मुहब्बत।
तुम्हें देखा तो अपलक हो गया मैं,
खुदी है, खुद है, खुदा है मुहब्बत।
दो बदन, दो जाँ, दो हसरतें,
हुस्न और इश्क की अदा है मुहब्बत।
मुहब्बत में नहीं बदनाम जो,
उन्हें मालूम क्या, क्या है मुहब्बत।
मुहब्बत एक देवी की है ताकत,
भगवान का आशीष बना है मुहब्बत।

***

# एतबार

चलो आज हम पर तुम एतबार कर लो,
मुहब्बत पर एतबार एकबार कर लो।
न जाने तुम्हें प्यार कितना मिला है,
मेरी जान मुझसे भी तुम प्यार कर लो।
हजारों सितारों में एक चाँद भी है,
मेरे चाँद चाँदों से श्रृंगार कर लो।
ये मोती है, शबनम है, नीलम है, क्या है,
इन्हें अपने श्रृंगार पर भार कर लो।
मेरी जाँ जमाने के हम हैं बियाबाँ,
चलो आज तनहाँ में अभिसार कर लो।

***

# कर्ज

---

याद रखना यार मेरा प्यार तुझ पर कर्ज है,
भोर के तारे सा यह संसार मुझ पर कर्ज है।
नियति ने सावन में तेरी रेशमी चूनर चुरा ली,
अब तेरे जीवन का हर श्रृंगार मुझ पर कर्ज है।
जिन्दगी की शोखियों को तुम मना पाए नहीं,
आपकी मुस्कान का मनुहार मुझ पर कर्ज है।
आँसुओं के फूल सुरभित पथ में हैं तुमने बिखेरे,
अब तुम्हारी राह का हर खार मुझ पर कर्ज है।
कौन सा वह शाप है जिससे शिला सा मन बना,
ओ अहिल्या अब तेरा उद्धार मुझ पर कर्ज है।

***

# फैसला

आप क्या फैसला देंगे हुजूर,
जिंदगी आपकी मोहताज है।
खत्म कर दीजिए कानून को,
आँख है इनकी या ये बाज हैं।
मुहब्बत की अगर हैं हथकड़ी,
मेरी खातिर मेरे रबाब हैं।
प्यार कह कर जरा सा देखिये,
किसने छेड़ा ये दिल का साज है।
आपके बिन मैं जी नहीं सकता,
आप कुछ बोलिए क्यों लाज है।

***

# हासिल

---

तड़पने से भी क्या हासिल,

बता मुझको ऐ मेरे दिल।

मुहब्बत में ये मजबूरी हमारी,

नहीं सकते हैं तुमसे मिल।

हमारे आँसुओं की झील में,

है रौशन प्यार की कंदिल।

टुकड़े करोड़ों दिल के हो,

तुम्ही हो पर मेरी मंजिल।

कहे जो बेवफा तुमको,

जुबाँ जाएगी उसकी छिल।

***

# जवानी

रहे याद ओ युवक कभी तू अपना पथ ना भूले,
तू चाहे तो धरा उठाले चाहे तो नभ छूले।
हमने जब चाहा पृथ्वी पर स्वर्ग ही खींच लिया है,
शिखर हिमालय के ऊँचे, बाहों में भींच लिया है।
पथ के शूलों को यदि तू चाहे तो फूल बना ले,
प्रतिगामी प्रतिकूल हवाओं को अनुकूल बना ले।
हमने श्रमसीकर से कण-कण पर निर्माण लिखा है,
बचपन के रोते अधरों पर हमने गान लिखा है।
हम मरुथल की छाती पर हँसकर के धान उगाएँ,
हरी-भरी हँसती फसलें मरघट में प्राण जगाएँ।
हल, बंदूक, लेखनी, इन पर सम अधिकार हमारा,
पुष्ट भुजाओं के बल पर सारा संसार हमारा।
हम कब कैद रहे हमको बस आजादी है प्यारी,
सरयू जल से चंचल पावन गौरव के अधिकारी।
आइए हम राम कृष्ण शिव शक्ति पुंज का दर्पण बनें,
आइए सत्यम शिवम सुंदरम को अपना सर्वस्व अर्पित करें
यौवन उसको कहते हैं जो नीर में आग लगा दे,
अवसर आने पर अग्नि में भी शीतलता ला दे।
पराधीनता की बेड़ी हरदम यौवन ने काटी,
हम सब मात्र अर्चना हैं, आराध्य देश की माटी।

***

# राह

राह पथरीली मगर कदमों में जर्जरता नहीं,
इन्कलाबी खून यारों मौत से मरता नहीं।
चीथड़ों से झाँकती शर्मों हया की बात कर,
चाँद से मुखड़ों को देखे अब ये मन करता नहीं।
भूख से सुखिया मरी तब फूटकर मैं रो पड़ा,
अब किसी आघात से नयनों से कुछ झरता नहीं।
जहर घुलता है हवा में शहर यह अभिशप्त है,
अब कोई भी पाप करते क्यों सुमन डरता नहीं।
आसमाँ में महल गढ़ते कुछ नहीं हासिल हुआ,
दोस्त अपनी ही जमीं पर क्यों कदम धरता नहीं।
प्यार को भगवान कहकर किस लिए पूजा करूँ,
प्रेम की गजलों से खाली पेट भी भरता नहीं।
आज मैं उन्मुक्त करता हूँ तुमें अभिशाप से,
अब कोई भगवान मनु के पाप भी हरता नहीं।

***

# कोई गम नहीं...

अब गम नहीं है हमें कोई भी गम नहीं,
हैं आप मुझसे दूर इस दुनियाँ में हम नहीं।
डरते हैं तेरे आँख के आँसू से हम बहुत,
अब फिर भिगो दे आँख किसी शै में दम नहीं।
खुशियों की चाह में बहुत भटकी हो मेरे साथ,
भटकाव तेरा थम गया ये बात कम नहीं।
आँसू तुम्हारे नयन के मेरी आँख भर गए,
ये बात और है कि मेरी आँख नम नहीं।
झुक कर किसी की शानों पर मुझको न देखिए,
इतना करम न कीजिए, इतना करम नहीं।
माना कि बेवफा हूँ मुझे कीजिए मुआफ,
परदा हटा दिया है अब कोई भरम नहीं।
कर दो मुआफ तुम भले भुगतुंगा खुद सजा,
कर दूँ मुआफ खुद को ये मेरा धरम नहीं।

***

# बाहर अमी न खोज

आदत से खुश मिजाज हूँ,
मुझमें गमीं न खोज।
हँसता हुआ गुलाब हूँ,
मुझमें कमी न खोज।
मुझमे ही नाचते हैं,
राम श्याम झूम झूम।
जिसमें न सिया राधा हों,
ऐसी जमीं न खोज।
मरुभूमि से हृदय में,
तूफान और बवंडर ।
ओठों के मरुस्थल में,
शीतल नमी न खोज।
मैं हूँ अथाह सागर,
हिम खंड से भरा हूँ।
मेरा भी है किनारा,
तू सरजमीं तो खोज।
अमरत्व पुत्र हूँ मैं,
हूँ अवनि का पुजारी।
है सुधा तेरे अंदर,
तू बाहर अमी न खोज।

***

# आशीर्वाद

---

तपती हुई जमीन है और दूर बहुत गाँव है,

पेश हथेलियाँ मेरी रख लीजिएगा पाँव।

जन्नत में आशियाना है आपने बनाया,

आशीष भरे हाथ में करता रहूँगा छाँव।

तुम हो हमारे काबिल, हम हैं तुम्हारे काबिल,

हम जीत गए बाजी में जिन्दगी का दाँव।

उपहार तुम्हें क्या दूँ खुद सुमन है तुम्हारा,

आ कर लगी किनारे अब जिन्दगी की नाव।

खामोशियों को जग में नीलाम कर दिया,

मुखरित खरों के जबसे बढ़ने लगे हैं भाव।

***

# बाकी सब ठीक है...

कुछ खोकर कुछ पाना, रोकर के फिर गाना।
बंधकर के टूटना, टूटकर फिर जुड़ जाना।
अपना अस्तित्व बोध, फेंककर समुद्र में।
गहरे में जाकर के, ढूँढकर के फिर लाना।
यही गलत लगता है, बाकी सब ठीक है...।
सड़कों पर उछलते, इंकलाब के नारे।
रोटियों के बदले में, गोलियों की बौछारें।
सिसक सिसक कर बचपन, भूखा सो जाता है,
बचपन अब सीधे ही, बूढ़ा हो जाता है।
यही गलत लगता है, बाकी सब ठीक है...।
माथे से टपकता, खून बन पसीना।
अपनी ही लाश को, रौंदकर के जीना ।
यही गलत लगता है, बाकी सब ठीक है...।
साँसों से जुड़ी हुई, हर पल की हड़तालें।
आस्था की फसलों पर, पड़ते निश दिन पाले।
यही गलत लगता है, बाकी सब ठीक है...।
हो गयी मृग तृष्णा सी, सुख की दो साँस भी।
धरती कठोरतम, निर्गम आकाश भी।
बाजारू औरत सी, मौत यहाँ घूम रही,

राहों में जिस तिस को, सड़कों में चूम रही।
यही गलत लगता है, बाकी सब ठीक है...।
सूली पर जो चढ़ा, कहा गया ईसा है।
अपनी मजबूरियों ने, हमें स्वयं पीसा है।
रोटी के प्रश्नों से, डरे हुए लोग हैं।
जिंदगी घसीटते, मरे हुए लोग हैं।
यही गलत लगता है, बाकी सब ठीक है...।

***

# मानव जीवन में परिवर्तन

मानव जीवन में परिवर्तन, देख कवि क्यूँ रोया है?

देख रहा हूँ कूकुर साला, डबल बेड पर सोया है।

बेटा पढ़ा लिखा कुर्सी पर, बना कलेक्टर ऐंठा है।

नालायक का बाप सामने, पायदान पर बैठा है।

माँ का गौरव नतमस्तक है, मम्मी और ममी से।

पापा भी अब पा ही रह गए, पा की एक कमी से।

पिता, पिता जी, बाबू जी, सुनने को कान तरस गए।

अम्माँ, माँ की ममता के, आँसू भी यहाँ बरस गए।

सिस-सिस कहते है बहनों को, ब्रो हो गए सब भाई।

चाचा चाची, मौसा मौसी अब अंकल है कहलाई।

***

उसके नयनों के काजलों

उसके नयनों के काजलों,
ओ काले काले बादलों,
आओ सब झूम झूम के,
अवनि को सूखी बनाओ,
धरती का हिय हरषाओ,
वसुधा को यूँ नहलाओ,
सब हरा भरा हो जाए,
ज्यूँ नई धरा हो जाए।
वर्षा तुम हो जीवन का गीत,
तेरी टिप-टिप बूंदों में संगीत।
तुम गंगा यमुना का वैभव बन उतरो,
जल ही जीवन है जग का मी।
रिमझिम रिमझिम झम झमाझम,
बरसो बरसो बरखा रानी।
तुम बिन सूखी सूनी धरती,
बनकर बरसो जीवन दानी।
जंगल तुम बिन तरस रहे,
पर्वत तुम बिन तरस रहे।
मेरे अंगने भी सुमन खिलें,
तुम बिन लो बदरा बरस रहें।

***

# सुखमय हो जीवन सारा

आप मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं मुझे विश्वास है,
आप मेरी आँखों के तारे हैं ये मेरी आस है।
आप के चरण कमलों में रखा है शीश वारे हैं,
मेरे स्वामी मेरे प्रियतम परम प्रिय गुरु हमारे हैं।
जै शिव भोले जै शिव भोले,
जै काशी विश्वनाथ बम बम।
जग रमा हुआ है माया में,
तुम मुझमें रमे रहो हरदम।
हे माता जानकी श्रीराम को सुध दिला देना,
मेरे बजरंग लाला याद तुम भी कुछ दिला देना।
यहाँ एक सुमन चढ़कर चरण में है वंदना करता,
मुझे दर्शन दिला देना सुमन को दरस दिला देना।
तुलसीदास हो, गंगाजल हो, महाप्रसाद हो मुख में,
हे नारायण दौड़े आना जब भी पुकारूँ दुख में।
सुख ही सुख है गुरूवर मेरे जीवन में आए,
सुख में तुम्हें पुकार रहा हूँ, आओ भगवन सुख में।

***

# सौ गीत है सौगात में

सौ गीत है सौगात में, सौ साल की हो जिंदगी।
सौ साल का एक दिन बने, जिंदादिली हो जिंदगी।
सेहत नहीं तो कुछ नहीं, सुख प्रथम निरोगी काया रहे।
जो मिले उसे स्वीकार करो, घर में परिपूरित माया रहे।
घर की लक्ष्मी वामांग रहे, तन मन से रहे सदाचारी।
संतान राम से, सीता सी, जो रहे सदा आज्ञाकारी।
जीवन पथ पर चलता जीवन रथ, है बार बार जग में आना।
जीवन भर गीतों को बोना, फिर उनको जीवन भर दोहराना।
संतोष धैर्य का अनुपम धन, हो भरा लबालब कोष रहे।
तुम हो समर्थ तुम शक्ति पूंज, यौवन का तुममें जोश रहे।

***

# मेरी नजर में "सुमन हूँ मैं" आपके लिए...

छत्तीसगढ़ के दीर्घकालिक वरिष्ठ पत्रकार श्रीराम कुमार तिवारी 'सुमन' के समक्ष मैंने उनकी कालजयी रचनाओं को पुस्तक के रूप में देखने की इच्छा करीब तीस वर्ष पहले प्रकट की थी। आज 'सुमन हूँ मैं'- आपके लिए... के रूप में आपके हाथों में एक परिकल्पना यथार्थ के रूप में है।

शब्द शिल्पी श्री सुमन ओजस्वी वक्ता, सफल पत्रकार एवं हिन्दी और छत्तीसगढ़ी भाषा के महत्वपूर्ण कवि हैं। साठ वर्षों से साहित्य के पथ पर चलते हुए आकाशवाणी रायपुर से 1970 में आपके गीतों, गजलों का प्रसारण हुआ। अनेक समाचार पत्रों में कविताएँ प्रकाशित हुई हैं।

प्रस्तुत संकलन में मुझे जीवन के इंद्रधनुषी रंग समाए मिले। माँ सरस्वती की वंदना आरती से प्रारंभ संकलन में सद्गुरू, माँ भारती, छत्तीसगढ़ महतारी के प्रति कृतज्ञता, 'बस एक तुम हो मेरी माँ', 'माँ का आँचल है सबसे प्यारा', 'बिदा के बेरा' में रिश्तों की मिठास परिभाषित है।

वर्तमान युग में दर्शकों को और पाठकों को परोसी जा रही नग्नता, फूहड़ता और अश्लीलता पर श्री सुमन की स्वर्णिम लेखनी 'गोस्वामी तुलसी दास जी के नाम पाती' में लिखती है- भेजिए सतयुगी श्रीराम को, हनुमान सहित पावन करें प्रदूषित भू-धाम को। रूपिया पुराण में वर्तमान दौर का माना जाना वाला सत्य चित्रण पहले रूपिया कुछ होता था, अब सब कुछ रूपिया ही रूपिया, लिखकर समाज के विद्रूप सत्य को दिखाया है।

कवि की लेखन के प्रति प्रतिबद्धता (समर्पण) देखिए तुम मेरे जख्म की कराह को गजल समझो, हमें मंजूर है तमाम उम्र कराहते रहना।

'सुमन हूँ मैं'-आपके लिए! संकलन की रचनाएँ जीवन के विविध रंगों से साक्षात्कार कराती हैं। हमें विश्वास है कि इस संकलन की सभी रचनाएँ आप सब को पसंद आएंगी।

**के.पी. साहू**

प्रधान संपादक

"छत्तीसगढ़ जनादेश",

महासमुंद, छत्तीसगढ़